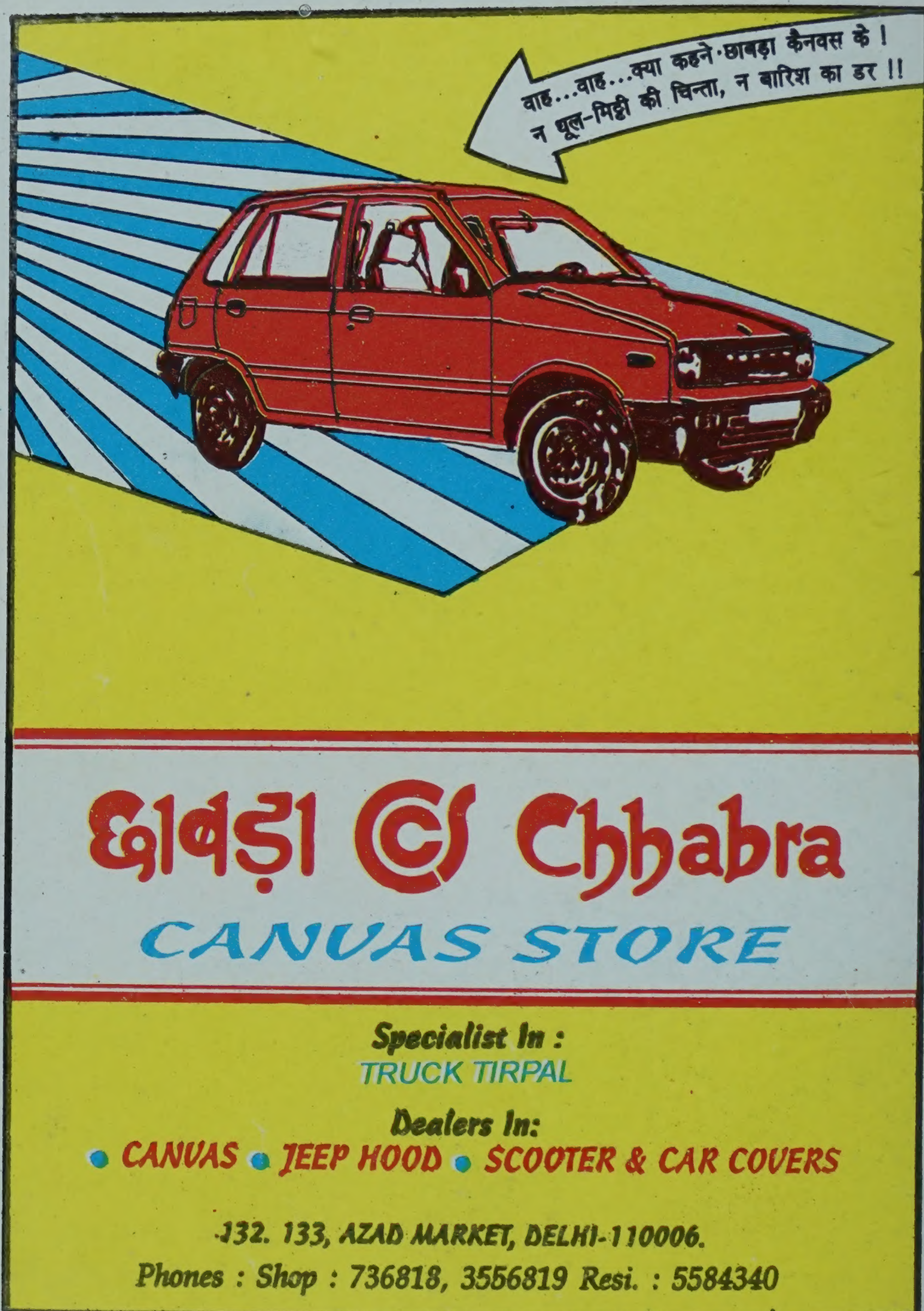
नववर्ष मंगलमय हो



हँसती दुनिया



जनवरी 1998



Shivali Ad. 7124107

वर्ष 25
अंक 1

हँसती दुनिया

(बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका)

जनवरी
1998

कहानियां

कविताएं

लेख

चित्रकथा :

स्तम्भ

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री निर्मल जोशी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 के लिये, हरदेव प्रिण्टर्ज निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 में मुद्रित करवाया।

कार्यालय फोन : 7430181

सम्पादक (अवैतनिक) विनय जोशी
सहायक सम्पादक विमलेश आहूजा
कला निर्देशक दीपक बग्गा

वार्षिक चन्दा : 30/- रु. जीवन-पर्यन्त : 300/- रु. एक प्रति : 4/- रु.
इंगलैण्ड £7 £100
अमेरिका $12, कनाडा $15 अमेरिका $150, कनाडा $200

सबसे पहले

-- तुम बड़े होकर क्या बनोगे ? -- सौरभ ने पूछा ।

-- मुझे क्या मालूम; पिताजी कहते हैं इंजीनियर बनो ।

-- और तुम! -- सौरभ भइया ने बॉबी की ओर इशारा किया ।

-- मुझे माता जी डॉ. बनाना चाहती हैं--उसने जवाब दिया ।

-- सौरभ ने फिर पिंकी से पूछा--तुम?

-- पिंकी बोली--अभी से क्या बताऊँ? यह तो दसवीं व बारहवीं कक्षा में जितने अंक आयेंगे, उस पर निर्भर करता है ।

लगभग इसी प्रकार के उत्तर बहुत सारे बच्चे दे रहे थे । सौरभ भइया किसी भी उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हो पा रहे थे । जब उनसे नहीं रहा गया तो बोले— साथियों! तुम्हारे जवाब यह बता रहे हैं कि तुम लाचार से हो, तुम्हारे अपने हाथ में कुछ नहीं है ? तुम भाग्यवादी व निष्क्रिय हो, तुम्हें अपने ही कर्मों पर विश्वास नहीं है ...।

सौरभ भइया ने अपने ढंग से बताया होगा पर बहादुर साथियों! मुझे विश्वास है कि तुम वैसे नहीं हो । तुम पहले से ही अपने लक्ष्य को निर्धारित कर लेते हो, फिर उस लक्ष्य की ओर पूरे मनोयोग से बढ़ना प्रारम्भ कर देते हो । इस प्रकार सद्कर्मों में निरन्तरता व परिपक्वता बनी रहती है । इसीलिये जो चाहते हो सफलतापूर्वक प्राप्त भी कर लेते हो । यही रहस्य प्रगति का है ।

मुझे पूरा विश्वास है कि नववर्ष पर सफलता के इस महामन्त्र को तुम अवश्य याद रखोगे । निराकार प्रभु पर विश्वास कर इसकी शक्ति को स्वयं में महसूस करोगे तब सदा ही सफलता को गले लगाते रहोगे ।

अन्त में कार्यालय में आये सैंकड़ो बधाई सन्देशों के लिए धन्यवाद व हमारी ओर से भी आप सबको **नववर्ष की शुभकामनाएं** ।

❑ **विनय जोशी**

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

रानी बंदरिया ने प्रतियोगिता जीती



नववर्ष के उपलक्ष में चंपकवन में इस बार एक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा था। इस भव्य कार्यक्रम की अध्यक्षता लम्बू जिराफ को सौंपी गई थी तथा राजा शेरसिंह को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था।

जंगल के सब छोटे-बड़े जानवरों को इस कार्यक्रम की सूचना दी गई थी। इस कार्यक्रम में सबसे बढ़िया प्रदर्शन करने वाले को राजा शेरसिंह की तरफ से विशेष पुरस्कार देने की भी घोषणा की गई थी।

समारोह के दिन नदी के किनारे वाले मैदान को दुल्हन की भान्ति सजा दिया गया था। शाम होते ही सारा जंगल वहाँ उमड़ पड़ा। निर्धारित समय पर कार्यक्रम की शुरुआत हुई। चीकू खरगोश, भीमा हाथी और काली बकरी को प्रतियोगिता का निर्णायक बनाया गया था।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में ही गोलू गधे ने डिस्को नृत्य प्रस्तुत किया तो सभी जानवर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये । तभी झूमता हुआ मोटू हाथी मंच पर आया । वह झूम-झूमकर अपना नाच दिखाने लगा । भारी भरकम शरीर के कारण वह सिर्फ झूम ही





सकता था । सब उसे उछल-उछलकर नाचने के लिए कहने लगे । जैसे ही वह नाचने के लिए उछला, धड़ाम से नीचे गिर पड़ा । यह देख सब हँस पड़े ।

अब भूरी बिल्ली आकर मंच पर अपना नृत्य दिखाने लगी । रंग-रंगीली वेशभूषा में वह आकर्षक लग रही थी । सभी पशु पक्षी उसका नृत्य तल्लीनता से देख रहे थे । अचानक भूरी की नजर सामने ही बैठे कुत्तों पर पड़ी तो घबराकर मंच से भाग गई । तभी मधुर राग छेड़ती हुई कोयल मंच पर प्रकट हुई । तोता, मैना और कबूतर भी नाचना





चाहते थे । पर उनका नम्बर ही नहीं आ रहा था । कोयल मधुर गीत सुना रही थी कि तभी किसी शरारती जानवर ने पटाखा जला दिया । उसकी तेज आवाज से कोयल डर गई और फुर्र से उड़कर पेड़ पर जा बैठी ।

पशु-पक्षी शोर करने लगे तो कार्यक्रम संचालक झबरू भालू ने टेबल पर हथौड़ा पीटा--चुप! खामोश !! सभी चुपचाप देखो । ये प्रतियोगिता हो रही है । बीच में कोई दखल नहीं देगा । सभी को बराबर मौका मिलेगा । झबरू की डाँट सुनकर सब चुप हो गये । झबरू ने पखरू मोर को नृत्य के लिए मंच पर आमंत्रित किया । रंग-बिरंगे पंखों वाला मोर नाचता हुआ मंच पर प्रकट हुआ । उसका नृत्य सभी का मन मोह रहा था । पशु-पक्षियों में खुसर-पुसर होने लगी, जरूर पखरू मोर ही प्रतियोगिता जीतेगा ।



नाचते-नाचते पखरू आदतन आसमान की ओर देखने लगा । स्वच्छ नीला आसमान देखकर वह नाचते-नाचते रुक गया, कहीं बादल छाए हुए ही नहीं दिखते, मैं कैसे नाचूँ? बादल न देख मोर निराश हो गया । जंगल का सबसे सुन्दर नृतक होकर भी पखरू नहीं नाच पाया ।

फिर शुरु हुआ बंटी बंदर का डांस । डांस के नाम पर उसकी उछल-कूद देखकर सबके पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गए । बंटी बंदर जैसे ही अपना डांस



खत्म करके लौटा, कई कछुए अपनी पीठ पर दीपक तथा मोमबत्तियाँ सजाए वहाँ आ पहुँचे तथा एक स्वर में 'नव वर्ष गान' गाने लगे । तभी तेज हवा के झौंके से दीपक तथा मोमबत्तियाँ गिर पड़ीं । यह देख जंगल के पशु-पक्षी उदास हो उठे, "क्या हमारे जंगल में कोई अच्छा नाच भी नहीं सकता?"

इतने में रानी बंदरिया की बारी आई । लाल-हरे लहंगे-चोली में सजी-संवरी रानी बंदरिया मंच पर आई । उसने प्रतियोगिता जीतने का पक्का इरादा बना रखा था । इसी अवसर के लिए उसने खास पोशाक बनवाई थी । पूरी तैयारी व आत्म-विश्वास के साथ वह मंच पर आई थी ।

उसने ऊपर देखा न नीचे, न आगे देखा न पीछे । बस मस्ती में नाचती गई...नाचती गई । उसे थकने की भी परवाह नहीं थी । रानी बंदरिया इतना नाची, इतना नाची कि जंगल के सब पशु-पक्षी वाह-वाह कर उठे । उसका नाच देख सभी के चेहरे खिल उठे ।...

रानी बंदरिया प्रतियोगिता जीत गई । राजा शेर सिंह ने उसे जंगल की सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना के रूप में सम्मानित किया ।



कार्यक्रम संचालक झबरू भालू ने रानी बंदरिया को दो शब्द बोलने के लिए आमंत्रित किया । वह बोली -- ''मुझे अपने ऊपर पक्का भरोसा था कि इस बार मैं अवश्य प्रतियोगिता जीतूँगी । मैंने इसके लिए बहुत मेहनत की व पूरे आत्म-विश्वास के साथ मंच पर नाचने लगी । अपने पर पूरा भरोसा ही जीत का रहस्य है ।''

कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि राजा शेरसिंह व अध्यक्ष लम्बू जिराफ ने उद्‌बोधन दिया जिसका सार था, ''मन के हारे हार है, मन के जीत जीत।''

तीन बातें

तीन को प्रणाम करो	:	माता, पिता व गुरु
तीन के लिए लड़ो	:	आजादी, ईमानदारी, इन्साफ
तीन से दूर रहो	:	गुस्सा, कायरता, खुशामद ।
तीन से सदा अच्छा व्यवहार करो	:	नौकर, बुजुर्ग, व गरीब ।
तीन पर अपना काबू रखो	:	क्रोध, आदत व जुबान
तीन बातें मत भूलो	:	उपकार, उद्देश्य व उदारता ।
तीन के लिए मर मिटो	:	धर्म, देश व दोस्त ।
तीन के लिए सदा तैयार रहो	:	दुःख, मौत, व मुसीबत ।

- संग्रहकर्ता : अश्वविन्द्र कौर (लुधियाना)

कहानी : क़दीर जावेद प्रेमी.

अक्लमन्द राजकुमारी



एक राजा था उसे अन्य राजाओं की तरह ना तो सुन्दर-सुन्दर भवन बनवाने का शौक था ना ही गाने सुनने में कोई रुचि ही थी । शौक था तो केवल सारे जग का धन एकत्र करने का । उसके पास एक बड़ी सेना भी थी जिसे वह धन जमा करने के लिए प्रयोग करता था । आस-पास के छोटे-छोटे राजाओं को अपनी लम्बी सेना के रोब में लेकर वह सारा धन छोटे राजाओं से छीन लेता था । सारे राजा उसके इस कार्य से बड़े परेशान थे पर इतनी बड़ी सेना के खौफ से कोई भी उसके खिलाफ आवाज ना उठाता था ।

जिस समय की यह बात है उस समय चीन में एक राजकुमारी की बुद्धि की बड़ी शोहरत थी राजा को भी राजकुमारी की अक्ल के सम्बन्ध में सभी कुछ मालूम था । उसे लोग बता चुके थे कि चूंकि चीन की उस राजकुमारी के पास भी एक बड़ी सेना है हथियार भी उसके पास अत्यधिक हैं, राजा को चीन पर हमला करने से पूर्व बहुत कुछ सोचना था । राजा को सोच में डूबा देखकर उसके बेटे ने उसे सलाह दी ।

·हमले से कहीं अच्छा है कि राजकुमारी की तरह अक्ल से काम लिया जाये ताकि खून-खराबा भी ना हो और आसानी से आपको उसका धन भी मिल जाये ।

राजा को बेटे की बात भा गई । पूरी बात सुनकर उसने बेटे से कहा—तुम्हारी बात ठीक है । हम स्वयं राजकुमारी की अक्ल की परीक्षा लेंगे।

राजा चीन की ओर सेना लेकर चल पड़ा मगर उसने सेना को नगर से बाहर रुकने को कहा और खुद भेस बदलकर नगर में गया । राजकुमारी ने राजा का चित्र देख रखा था । अतः भेस बदलने का राजा का तरीका



उसके सामने फेल हो गया । उसने राजा को फकीर के वेष में भी आसानी से पहचान लिया था । उसने किसी को भी यह नहीं बताया कि जिस फकीर को वह अपने सिपाहियों से पकड़वा रही है वह वास्तव में कौन है ।

राजकुमारी ने फकीर बने राजा को बन्दी बनाकर जेल में डाल दिया साथ ही हुक्म दिया ।

इस फकीर को कोई चीज भी खाने को हरगिज ना दी जाये ।

सरकारी हुक्म था उसे ना मानना आसान ना था । फकीर का भूख से बुरा हाल था । उसने सिपाहियों से खुशामद की । कृपया थोड़ा-सा खाना



ला दो पर किसी भी सिपाही ने उसकी बात पर ध्यान ना दिया। फकीर का भूख से बहुत बुरा हाल था।

दूसरे दिन राजकुमारी ने कैद खाने से फकीर को दरबार में लाने को कहा। जब वह आ गया तो राजकुमारी ने उसके सामने ढेर सारे हीरे-जवाहरात रखे।

—यह लो तुम्हारा ईनाम है...

—राजकुमारी मुझे हीरे जवाहरात नहीं खाना दे दो।

—क्या भूख लगी है ?

—हाँ बड़े जोर की।

—इनको जौ की रोटी लाकर दो।

फकीर को जौ की रोटी दी गई। जिसको उसने बड़े चाव से रुखा ही खाया।

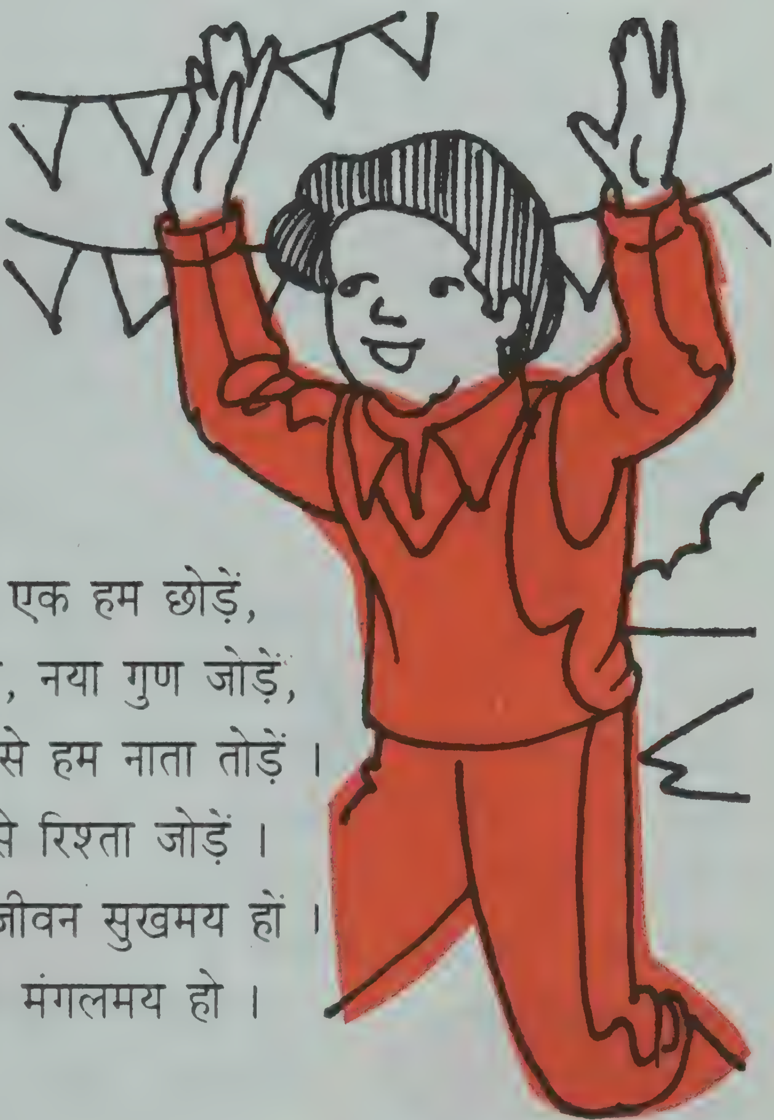
तब राजकुमारी ने उससे कहा--राजा जी देखा आपने धन का कमाल। आखिर उससे आपकी भूख समाप्त ना हो सकी। भूख मिटी तो रोटी से। चाहे वह कितनी भी मामूली क्यों ना हो। आप नाहक धन के लालच में लोगों को सताते हैं। सोचो लाभ और हानि।

राजा ने सुना सोचा और बस उस रोज से धन जमा करने का विचार त्याग दिया। उसके मन से धन इकट्ठा करने की लालसा जाती रही।

कविता : ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

नया वर्ष मंगलमय हो

नये दिन, नये वर्ष में
नयी नयी हों बातें
खुशियों से जगमग हो जायें ।
सभी की सभी अंधेरी रातें ।
कार्य सभी के पूर्ण सफल हों,
नया वर्ष मंगलमय हो ।





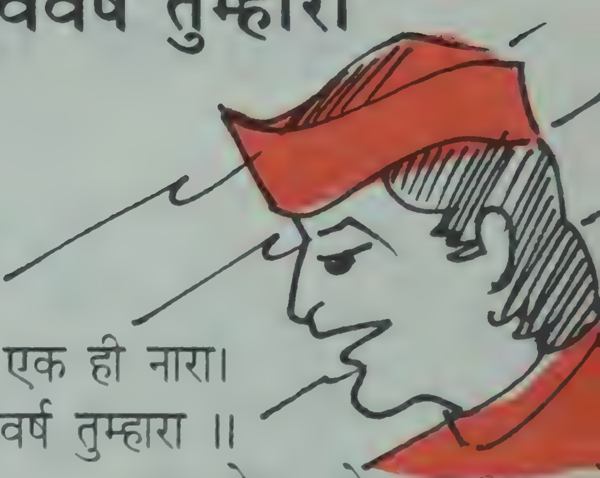
अवगुण एक हम छोड़ें,
नये दिन, नया गुण जोड़ें,
आलस से हम नाता तोड़ें ।
मेहनत से रिश्ता जोड़ें ।
सबका जीवन सुखमय हों ।
नया वर्ष मंगलमय हो ।

काका-काकी, नाना-नानी
पास-पड़ोसी, शिक्षक-मैडम,
वन-उपवन, बंदर और भालू,
तुम, हम, आप, उन-सबका,
हर दिन, हर पल सुखमय हों,
नया वर्ष मंगलमय हो ।



कविता : सोमदत्त पाठक

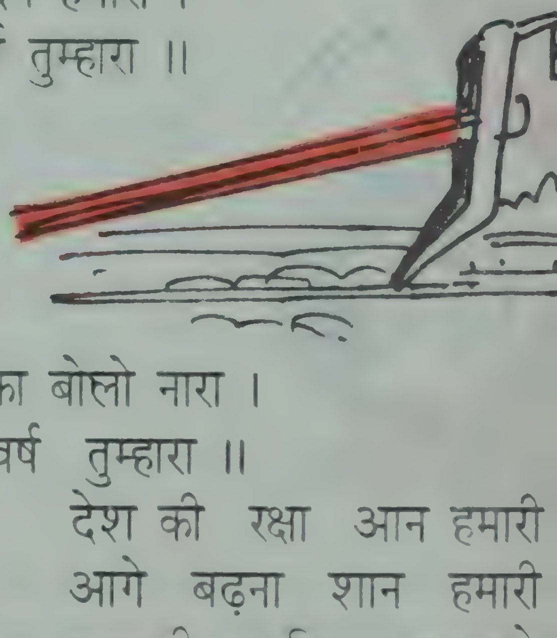
मंगलमय नववर्ष तुम्हारा



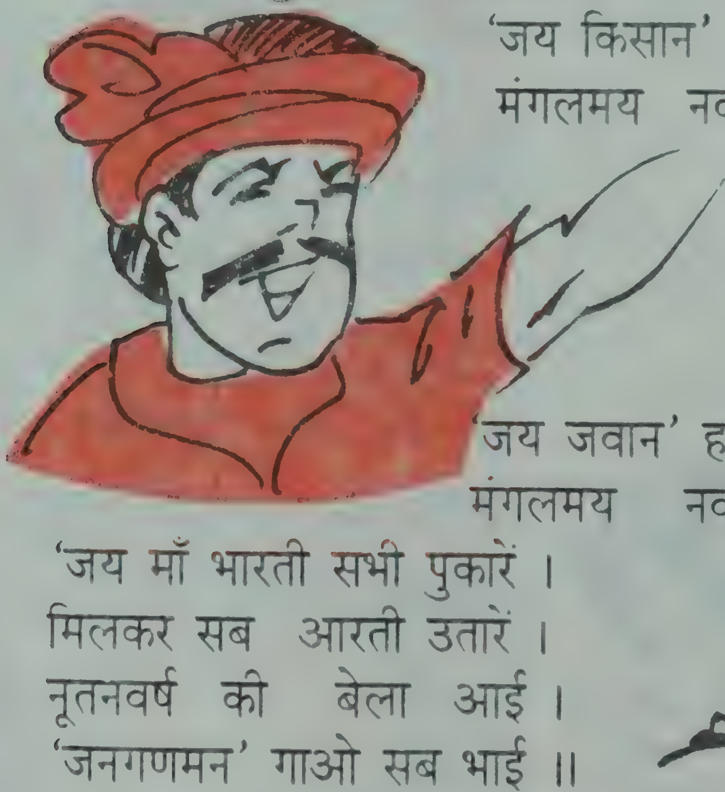
मंगलमय नववर्ष तुम्हारा ।
मिलजुल कर दें सभी बधाई ।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ।
जगतगुरु सिरमोर प्रवासी ।
'भारतमाता' एक ही नारा।
मंगलमय नववर्ष तुम्हारा ।।



राग द्वेष को दूर भगाअ
कर्म ही पूजा को अपनाअ
काम से कभी न जी चुराअ
मेहनत से सब 'मिलें' चलाअ
उत्पादन है लक्ष्य हमारा ।
मंगलमय नववर्ष तुम्हारा ।।



मेहनत से हल खूब चलाओ ।
खेतों में सोना उपजाओ ।
पूतों को तुम दूध पिलाओ ।
भारत को खुशहाल बनाओ ।।
'जय किसान' का बोलो नारा ।
मंगलमय नववर्ष तुम्हारा ।।



देश की रक्षा आन हमारी
आगे बढ़ना शान हमारी
रणमाटी का तिलक लगाओ
देश की रक्षा में डट जाओ
'जय जवान' हम सबका प्यारा ।
मंगलमय नववर्ष तुम्हारा ।।



'जय माँ भारती सभी पुकारें ।
मिलकर सब आरती उतारें ।
नूतनवर्ष की बेला आई ।
'जनगणमन' गाओ सब भाई ।।
नभ चूमें ये तिरंगा प्यारा ।
मंगलमय नववर्ष तुम्हारा ।।

कहानी : ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

हाथी के कटे कान

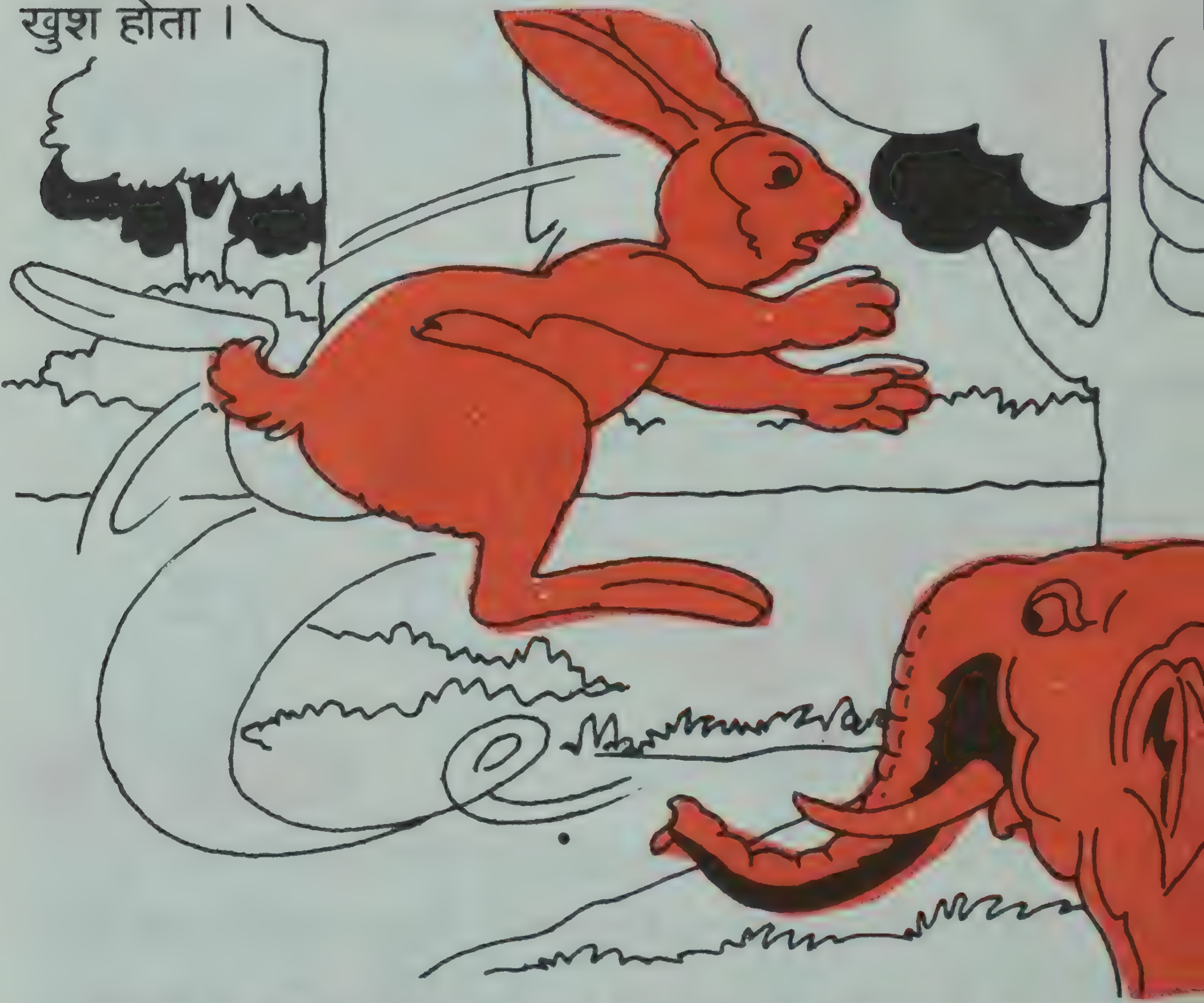


एकता वन में रोबिन हाथी के आतंक से एकतावन के सभी जानवर परेशान थे। वह कभी जानवरों को मार भगाता तो कभी पैरों के नीचे कुचल देता था। जो भी अच्छी चीज किसी के पास होती, छिन लेता। किसी के खेत से गन्ने चोरी कर खा जाता।

सभी जानवर उससे डरते थे। कई जानवरों ने उसे सामझाने की काफी कोशिश की कि रोबिन सुधर जाए, पर सब बेकार। उसे भगवान से डराया गया। दूसरे हाथी से धमकाया गया। सबने उसका बहिष्कार भी किया। पर रोबिन पर कोई असर नहीं हुआ। तब मंदिर के पुजारी रोबिन के दोस्त ने उसे समझाया—दोस्त! चोरी करना अच्छा नहीं है। चोरी करोगे तो भगवान तुम्हें जलते अंगारे पर चलाएगा। मगर रोबिन को खूब समझाने पर भी कोई असर नहीं हुआ।

जंगलवासी रोबिन से बहुत परेशान थे मगर जंगल के नियमानुस
वे रोबिन की शिकायत वनदेवी से नहीं करते थे। बबलू हिरण उन्हें
बार रोक देता था। वह कहता—मित्रों! कोई प्राणी बुरा नहीं होता है
उसकी आदतें बुरी होती हैं। हमें उसे दूर करना चाहिए।

यही सुनकर भेड़ियाराम रोबिन को बताया करता था कि— बब
खरगोश ने उसे आज किस तरह बचाया है। रोबिन हाथी यह सुनकर ब
खुश होता।



आज जब बबलू जंगल से दरबार की ओर जा रहा था। तब साम
से रोबिन हाथी आता दिखाई दिया। तब बबलू ने उससे नमस्कार कि
तो बदले में रोबिन ने उसे उठाकर दूर फैंक दिया।

बबलू इतना दूर गिरा कि उसके हाथ- पैर की हड्डी टूट गई। य
बात वनदेवी को मालूम हुई तो उन्होंने रोबिन हाथी को पकड़कर ल
का आदेश दिया। चपलू-पपलू जहाँ कहीं रोबिन हाथी मिले पकड़कर
आओ!

पूरा एकतावन छान मारा पर रोबिन हाथी नहीं मिला। वह एक ग
में छुप गया था।



यह सूचना पाते ही चपलू-पपलू तीखे-तीखे अंकुश लेकर गड्ढे के समीप पहुँचे ।

रोबिन! बाहर आ जाओ, तुम्हें गिरफ्तार किया जाता है । मगर जब रोबिन बाहर नहीं आया तो चपलू-पपलू ने अंकुश से उसके दोनों कान पकड़े और खींचते हुए दरबार में ले आए ।

जब दरबारियों ने रोबिन के कान काफी बड़े और बीच से कटे हुए देखे तो बहुत हँसे । रोबिन अपनी इस दुर्दशा पर दु:खी होकर वनदेवी से माफी मांगने लगा—देवी ! मुझे माफ कर दो और कृपया मेरे कान वापस छोटे





कर दो । मैं अब किसी को नहीं सताऊँगा । सजा के तौर पर मैं सदा वनवासियों की रक्षा करुँगा ।

इस पर वनदेवी ने कहा — जाओ! सभासदों की विनती पर तुम्हें माफ किया जाता है मगर, तुम्हारे कान इसी तरह बड़े-बड़े और बीच से कटे हुए रहेंगे ताकि तुम इन्हें देखकर कभी बुरे काम न करो और इसका नतीजा याद करते रहो ।

कहते हैं तब से हाथियों के कान बीच में से थोड़े कटे हुए और बड़े-बड़े होते हैं ।

—कहानी की सत्यता चाहे कुछ भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि विनीत व दयावान होने से हम सभी के सुपात्र हो जाते हैं इसलिये सुपात्र ही बनें । ■



कभी न भूलो

प्रस्तुतकर्ता : सन्तोष कुमार बबेरवाल (गिदड़बाहा) प्रहलाद जसवानी (मण्डला)

- आत्म विश्वास आत्मज्ञान और आत्म-संयम यह जीवन का स्वर्ग बना देते हैं ।
- गुरु के आदेश के उलट की गई हर बात ही दुख का कारण बनती है

— निरंकारी बाबा

- सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

— ऋषि दयानंद

- कर्म ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाता है ।

— विनोबा भावे

- क्रोध को जीतने मन जितना सहायक होता है उतना और कोई नहीं ।
- जिसमें आत्म विश्वास नहीं है उसमें अन्य चीजों के प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है ।

— महात्मा गाँधी

- यश त्याग से मिलता है धोखे धड़ी से नहीं ।
- क्रोध प्राणी का नाश करता है ।

— भगवान महावीर

- कुछ लेना चाहो तो कुछ देना सीखो ।

— सुभाष चन्द्र बोस

- सबसे बड़ी दौलत प्रसन्नता है ।

— स्वेट मॉडन

- मस्तिष्क के लिए अध्ययन उतना ही आवश्यक है जितना कि शरीर के लिये व्यायाम ।

— जोसेफ एडीसन

- बुद्धिमत्ता माणिक से भी अधिक मूल्यवान है ।

— बाइबिल

दादा के उत्तर

— रजनी सेठी (नोएडा)

प्रश्न : दादाजी, क्या भूत होते हैं? या नहीं ?

उत्तर : जो कुछ वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध न किया जा सके उसे कुछ भी नाम दिया जा सकता है ।

प्रश्न : इन्सान एक जैसा क्यों नहीं होता ?

उत्तर : अनेकता में एकता प्रकृति का विधान है ।

— ओम, सोनू, रेखा, सोनम (ब्यावर)

प्रश्न : आदमी को किस सीमा तक हँसना चाहिए ?

उत्तर : नैतिकता की सीमा तक ।

प्रश्न : क्या सन्त निरंकारी मण्डल से कुछ नयी पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है?

उत्तर : हाँ ।

— ओमसिंह (भीम उदयपुर)

प्रश्न : क्या हमें हमारे कर्म के अनुसार फल मिलता है या भगवान ने जन्म से ही लेख लिख रखा है?

उत्तर : कर्म के अनुसार ही लेख लिखे जाते हैं ।

— नीलम कुमारी पालड़ी (ब्यावर)

प्रश्न : क्या सुमिरन करने से दुनिया की हर दुर्लभ वस्तु प्राप्त की जा सकती है?

उत्तर : अवश्य मिल सकती है परन्तु सुमिरण निःस्वार्थ भाव से हो ।

— कुशाल एच. पवार (पालड़ी)

प्रश्न : समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कुछ नहीं मिलता। फिर मनुष्य क्या स्वयं अपनी तकदीर बना सकता है ?

उत्तर : मनुष्य अपने कर्मो से अपनी तकदीर या भाग्य बनाता है । भाग्य से अधिक और समय से पहिले उसे आशा और उत्साह मिलता है।

— इरफान पठान (कुरखेड़ा)

प्रश्न : दादाजी, दौलत की चाहत कब तक बरकरार रहती है ?

उत्तर : जब तक संतोषधन न आए ।

— आतीश गुंडेडवार (कुरखेड़ा)

प्रश्न : दादा जी, इन्सान जब जन्म लेता है तब उसकी दोनों मुट्ठी बन्द रहती है तथा मरने पर खुली क्यों?

उत्तर : यह शारीरिक प्रक्रिया है । पैदा होते समय शरीर अधिक से अधिक सुकड़ा हुआ होता है । ज्यों-ज्यों बड़ा होता है उसके अंग खुलने लगते हैं।

प्रश्न : दादाजी, अगर हम किसी गरीब की मदद करना चाहें और वह हमारी मदद न लेना चाहे इन्कार कर दे तो क्या करना चाहिए?

उत्तर : उसकी महानता को स्वीकार करके उसे नमस्कार करना चाहिए ।

— दिनेश (भटिण्डा)

प्रश्न : दादाजी, सत्य और झूठ में कितना अन्तर है?

उत्तर : जितना आँख और कान में । केवल समझ का ।

— शुभम् (भटिण्डा)

प्रश्न : दादा जी, जब मनुष्य को पता है कि उसकी मृत्यु होनी है तो भी वह बुरे कर्म क्यों करता है?

उत्तर : अज्ञानता के कारण ।

— कुमुद (भटिण्डा)

प्रश्न : दुनिया में सच्चा मित्र कौन है?

उत्तर : जो हर परीक्षा में खरा उतरे ।

— प्रहलाद जसवानी (मण्डला)

प्रश्न : दादाजी, भगवान सब कुछ देख रहा है ऐसे विचार रखने वाले कभी भी गलत कार्य क्यों नहीं करते ?

उत्तर : भगवान से कुछ छिपा पाना सम्भव नहीं होता, इसलिये ।

— भाषी धमीजा (पानीपत)

प्रश्न : क्या इस युग में कृष्ण-सुदामा जैसी सच्ची दोस्ती मिल सकती है?

उत्तर : हाँ क्यों नहीं । प्रकृति के विधान में कभी किसी का बीज नाश नहीं होता ।

प्रस्तुति : रजनी मिश्रा

डाक मोहर की कहानी

बच्चों ! डाक विभाग से जो पत्र तुम्हें मिलते होंगे उन पर एक गोल मोहर काली स्याही से लगी रहती है। सभी पत्रों में चाहे वह पोस्टकार्ड हो या अंतर्देशीय और चाहे रजिस्टर्ड लिफाफा-पार्सल हो, यह मोहर लगाई जाती है। इस मोहर का क्या अर्थ होता है ? यह क्यों लगाई जाती है ? तथा इस मोहर का सर्वप्रथम प्रचलन कब प्रारम्भ हुआ ? ऐसे कई सवाल तुम्हारे दिमाग में जब-तब अवश्य ही उठते होंगे।

जब दुनिया में डाक व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ तब इन मोहरों का प्रचलन नहीं था। उस समय पत्रों पर डाक टिकट लगाने की व्यवस्था भी नहीं थी। बस, पत्र को लेकर डाक व्यवस्थापक पत्र प्रेषक से पत्र प्रेषण का नियत शुल्क लेकर पत्र गंतव्य स्थल के लिए भेज देता था। यदि पत्र प्रेषक पत्र प्रेषण शुल्क अग्रिम नहीं देता था तो पत्र पर लिख दिया जाता था कि पत्र प्रेषक का शुल्क बकाया है अतः पत्र प्राप्त करने वाले से प्राप्त कर लिया जाता। तथा पत्र वाहक पत्र प्रेषण शुल्क, पत्र प्राप्त कर्ता से वसूल कर लेता था। पत्र कब भेजा गया और कब मिला, इससे कोई मतलब पत्र प्रेषक तथा पत्र प्राप्तकर्ता दोनों को ही नहीं था।

पत्रों के विलम्ब से पहुँचने की समय गणना करने की समस्या से निपटने के लिए इंगलैंड के तत्कालीन पोस्ट मास्टर जनरल ने काफी विचार-विमर्श के बाद प्रत्येक लिफाफे पर एक गोल मोहर लगाए जाने का निर्णय लिया। इस गोल मोहर को दो भागों में एक रेखा द्वारा बीच से बाँटा गया था। ऊपर वाले भाग में महीने के दो अक्षर तथा नीचे के भाग में माह की तारीख अंकित करने का निर्णय लिया गया। इस मोहर में तब सन् तथा स्थान का उल्लेख नहीं दिया गया था।

इस मोहर का जन्म चूँकि कर्नल हेनरी बिशप द्वारा किया गया था इसीलिए इसे बिशप मोहर के नाम से सम्बोधित किया गया। इस मोहर का चलन सन् 1660 में प्रारम्भ किया गया। बिशप मोहर का प्रयोग लन्दन, डबलिन, ऐडिनबरा, उत्तरी अमरीका की ब्रिटिश कालोनियों में सन् 1785 तक जारी रहा। सन् 1785-86 में बिशप मोहर में थोड़ा सा परिवर्तन कर

तिथि, माह और वर्ष को अंकित किया जाने लगा। इसके बाद इस मोहर में क्रमशः कुछ ओर परिवर्तन किए गए। मसलन पत्र प्रेषक प्राप्त स्थल का नाम पोस्ट आफिस का नाम, पिन कोड, डाक निकाले जाने अथवा वितरित किए जाने के समय का उल्लेख भी किया जाने लगा। इसके बावजूद बिशप मोहर की गोलाई वाला आकार पूर्ववत् ही रहा।

डाक मोहर का टिकट पर लगाने का प्रचलन तब हुआ जब पत्र प्राप्त-कर्ता डाक टिकट, लिफाफे से निकालकर पुनः डाक लिफाफों पर प्रयोग करने लगे। तो उन टिकटों को निरस्त करने के लिए यह डाक मोहर, डाक टिकटों पर लगाई जाने लगी। इससे पहले डाक मोहर अलग तथा टिकट अलग चिपकाए जाते थे।

क्या आप जानते हैं?

संग्रहकर्ता : डा. रामलखन प्रजापति (आजमगढ़)

- चमगादड़ एक ऐसा प्राणी है जो अपने बच्चो को जन्म मुँह के रास्ते से देता है।
- छछुन्दर एक ऐसा प्राणी है जिसका रक्त सफेद होता है।
- एक साधारण इन्सान की त्वचा में 20 लाख से अधिक छिद्र होते हैं।
- गदहा एक मात्र ऐसा प्राणी है जो 24 घंटे में से केवल 30 मिनट ही सोता है।
- स्टेथोस्कोप (आला) के जन्मदाता 'स्पेनिश् मिलिटरी अस्पताल का मुख्य चिकित्सक 'आवनबर्गर' और 'रेनेलीनेक' हैं। इन्होंने सन् 1819 में स्टेथोस्कोप की खोज की।
- मेलानीन नामक पिगमेन्ट बालों को काला रखता है। इसकी कमी के कारण बाल सफेद हो जाते हैं।
- इन्सान के सिर पर चंगुल (गंजापन) एन्ड्रोजेन्स हारमोन्स की कमी से होता है।



बाल गीत : दर्शन कुमार 'दीपक'

जंगल में ठंड

ठंड बढ़ी जंगल में तो--
बन्दर जी घबराए
सोचा यूं न काम बनेगा
आग जलायी जाए ।
सोचा खूब विचारा, झट, फिर
फूस का ढेर लगाया ।
माचिस की तीली से उसको
यारों! तुरन्त जलाया ।
देख लपट ऊँची ऊँची तब--
पशु सभी घबराए
सोचा, अपने जंगल में हैं
बड़े शिकारी आए ।
आपस में कानाफूसी कर
भगे जानवर सारे
रहे भागते तब तक जब तक
थक न गए बेचारे ।



कविता : चैतन्य

जाड़ा निकला

निकला जाड़ा बक्से से
दस्ताने स्वेटर के संग
गर्मी छिपी अंगीठी में
दिखाने अपना रंग ।
कंपकंपी के साथ-साथ
शीत की आई लहर ।
कुहासे से छिप गये
गाँव-बस्ती और शहर
शर्बत और लस्सी के
भागे दूर सब दीवाने,
चाय और काफी लगी
चौराहे पर रिझाने ।
गर्मी के दिन इतराई थी
पेड़ों की ठंडी छांव
शीत की कंपकंपी से
उखड़ गये अब पाँव ।



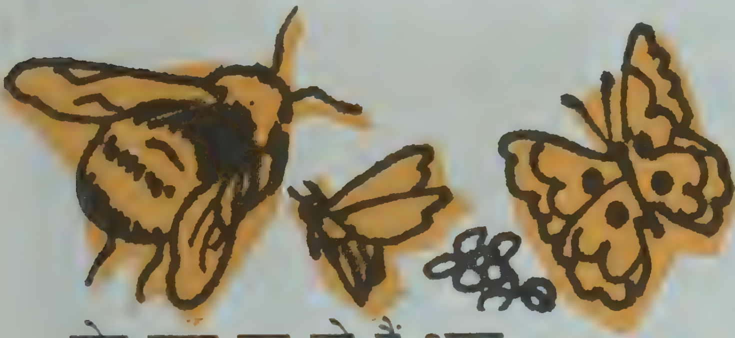
कविता : डॉ. मन्तोष भट्टाचार्य



मौसम



मचलते चहचहाते हुए ये पक्षी
खिलती हुई ये प्यारी धूप
हवा भी धीमी धीमी है
और ये मौसम भी है बहुत खूब ।



तितलियों का इठलाना बलखाना
भौरों का फूलों के निकट जाना
कोयल भी देखो कूक रही
गीतों के लय को फूँक रही ।

मोर नृत्य कर रहे हैं आज
चीटीयाँ बहुत कर रही है काज
सबका अपना-अपना काम
बाद में करते सब आराम ।





जब मौसम पशु पक्षी इतना
नित्य कर सकते हैं परिश्रम
फिर तो हम सक्षम हैं मानव
कैसा भय कैसी है शर्म ?

इनसे लेकर शिक्षा हमको
नित्य प्रति-श्रम करना है
अभी तो कोसों हैं हम पीछे
हमें तो आगे बढ़ना है ।




इन्हें जानिये_
प्रस्तुति व कला. अमित ओबराय टैगोर गार्डन एक्सटे. न.दि.27.
इंग्लैंड में पहले हड्डी बिठाने का काम वहां के लोहार कर दिया करते थे।
लाल रंग की एक मुर्गी जो हरे रंग के अण्डे देती है फ्लो० में 'स्टेवॉर्ट' के पास है।
सभी जानवर अपनी भाषा में बोल लेते हैं मगर लम्बी गर्दन वाला ज़िराफ़ गूंगा होता है।
KAMIO ART STUDIO.
ठीक है आपके डैडी का नाम सी. डी. राणा है.,पर सी.डी. का मतलब क्या है?
जी, सी. का मतलब 'कैट' और डी. का मतलब 'डॉग।'
NANHI

कहानी : प्रो. पी. आर. शुक्ला

चार जासूस

मध्य भारत की छोटी-सी रियासत विजयपुर में अचानक अपराधों की बाढ़ आ गयी। प्रतिदिन प्रात: राजा धर्मसिंह को सूचना मिलती कि पिछली रात नगर में किसी न किसी धनाढ्य के घर चोरी हो गयी। चोर इतना होशियार था कि चोरी के बाद ऐसा कोई सूत्र नहीं छोड़ जाता था, जिससे उसका कोई अता-पता मिल सके। नगर के साहूकारों की तो नींद हराम हो गयी थी। राजा धर्मसिंह स्वयं परेशान थे। उन्होंने अपने सभी सैनिकों को रात्रि में गश्त लगाने का आदेश दे दिया था व सभी नगर सेठों के घर पर पहरेदार नियुक्त कर दिये थे। विजयपुर के दीवान जी स्वयं नियमित रूप से घोड़े पर सवार होकर सुरक्षा व्यवस्था देखने निकलते थे। किन्तु इतना सब होते हुए भी चोरियों में कोई कमी नहीं आयी थी।

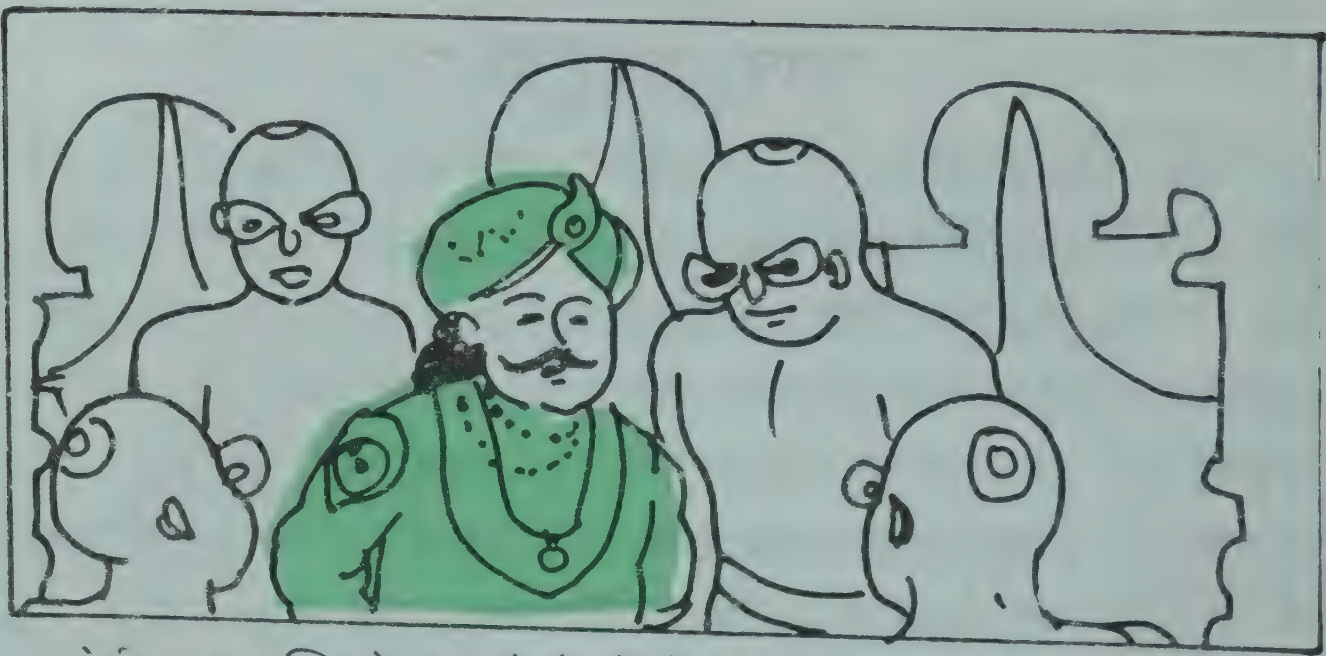
विजयपुर की बिगड़ती हुई स्थिति को देखकर राजा धर्मसिंह ने एक दिन विशेष दरबार आमंत्रित किया। इसमें दीवान जी, प्रधान सेनापति, राजगुरु तथा राजा के प्रमुख सलाहकारों के साथ ही साथ नगर के बुद्धिजीवी भी पधारे थे।

राजा ने सभी से इस समस्या पर विचार-विमर्श किया। सम्पूर्ण दिन निकल गया किन्तु कोई फल नहीं निकला अन्त में बिना किसी निष्कर्ष के दरबार उठ गया।

तभी राजा को चार जासूसों की याद आयी। सनकी से दिखने वाले चारों जासूस विलक्षण प्राणी थे। उन्हें राज दरबार में सभासदों का स्थान प्राप्त था। वे कभी-कभी राजदरबार में आते भी थे। किन्तु कभी साधुओं के वेश में, कभी सपेरों के वेश में। कभी दाढ़ी केश रखकर तो कभी सफाचट। चारों पक्के बहुरुपिये थे। उन्हें आज तक किसी ने भी असली रूप में नहीं देखा था।

राजा धर्मसिंह ने अपना एक विशेष दूत भेजकर चारों को महल के विशेष कक्ष में बुलवाया और अपनी चिन्ता कह सुनाई।

चारों जासूस चुपचाप पूरी बात सुनते रहे। उन्होंने इस समय विदूषक का रूप बनाया हुआ था। उनके चेहरे के भाव प्रतिक्षण बदल रहे थे। यदि



कोई अन्य व्यक्ति देखता तो हँसते-हँसते लोट–पोट हो जाता। किन्तु राजा धर्मसिंह गम्भीर थे। वे चारों की विलक्षण बुद्धि से परिचित थे। उन्होंने पहले भी अनेक जटिल समस्याओं को बड़ी सरलता से हल किया था।

चारों जासूसों ने अपनी गुप्त भाषा में एक मिनिट विचार-विमर्श किया।

—महाराज हमें बीस सेर वजन की सोने की मोहरें चाहियें। चोर चौबीस घण्टे के अन्दर पकड़ा जायेगा। उनमें से एक जासूस कंधे उचकाते हुए बोला।

राजा ने तुरन्त बीस सेर वजन की मोहरों की थैली मँगवा कर उन्हें दे दी। चारों ने थैली बगल में दबायी और गुप्त द्वार से बाहर आ गये। उन्हें किसी ने भी आते-जाते नहीं देखा था।



चारों जासूस शाम तक अपने-अपने कमरों में सोते रहे। अंधेरा होने के कुछ समय पूर्व वे उठे और थैली बगल में दबाये बाहर आये। इस समय वे व्यापारियों के वेश में थे।

चारों बड़ी देर तक नगर का चक्कर लगाते रहे। जब काफी अंधेरा हो गया तो राजमहल से कुछ ही दूरी पर एक जामुन के पेड़ के निकट पहुंचे। उन्होंने पेड़ की एक डाल से अपनी मोहरों की पोटली बाँधी और तने के चारों ओर एक आयत बनाकर इस प्रकार लेट गये कि उनके ऊपर से गुजरे बिना कोई पेड़ पर न चढ़ सके।

चारों बड़ी देर तक गपशप करते रहे फिर सो गये।



इधर रात्रि के ठीक बारह बजे खतरनाक चोर काले कपड़े पहने, काले घोड़े पर सवार होकर निकला। उसे कुछ समय पूर्व सूचना मिली थी कि चार व्यापारी एक बड़ी रकम लेकर नगर में आये हुए हैं और एक पेड़ के नीचे ठहरे हैं। चोर ने सोचा कि उनका माल बिना अधिक श्रम किये ही मिल जायेगा।

चोर सीधा उसी पेड़ के नीचे पहुँचा। जहाँ चारों जासूस सो रहे थे। उसे पेड़ की डाल से बँधी मोहरों की थैली दिखायी दे गयी। चोर ने देखा चारों व्यापारी से दिखने वाले व्यक्ति गहरी नींद में सो रहे थे। उसने डाल से बंधी मोहरों की थैली खोली और वापस लौट गया।

दूसरे दिन जब प्रातः जासूसों की नींद खुली तो मोहरों की थैली गायब थी ।

उन्होंने एक दूसरे की ओर रहस्यमय मुस्कान से देखा और गम्भीर होकर अपने काम में लग गये । कुछ देर तक चारों अलग-अलग ढंग से सोच-विचार करते रहे । फिर एक जासूस बोला यारों थैली इतनी ऊँचाई पर बँधी थी कि बिना पेड़ पर चढ़ हासिल नहीं की जा सकती थी और चोर पेड़ पर चढ़ा नहीं, यदि वह पेड़ पर चढ़ता तो हममें से एक की नींद अवश्य टूटती । नींद न भी टूटती, तो उसके पेड़ पर चढ़ने से दो-चार फल अवश्य टूटकर गिरते और मुझे पेड़ के चारों ओर घोड़े के पैरों के निशान भी दिखे हैं ।

तुम कहना क्या चाहते हो ?— तीनों एक साथ बोले ।

चोर अश्ववान है । —पहले जासूस ने विदूषक जैसा मुँह बनाकर अपना मत व्यक्त किया ।

अब दूसरा जासूस उठा और सबको घूरता हुआ बोला—पहले ने तो अपना काम कर दिया, उसकी बात काटी नहीं जा सकती । अब मेरी सुनो—थैली का वजन बीस सेर था । घुड़सवार बिना लगाम पकड़े घोड़े को नियन्त्रित नहीं कर सकता था । इसका मतलब उसने एक हाथ से लगाम पकड़ी होगी और दूसरे हाथ से थैली ।

—इसका क्या मतलब ? जो बात हो साफ-साफ कहो । दो जासूस एक साथ बोले । पहले वाला निकट बैठा मूर्खों की तरह अपने साथियों को घूर रहा था ।

—चोर शक्तिवान है ।— दूसरे ने भी आँखे झपकाते हुए अपना मत व्यक्त कर दिया ।

—ठीक-ठीक बिल्कुल ठीक । तुमने भी पहले की तरह अपना काम कर दिया । — दोनों बच्चों के समान खुश हो गये ।

अब तीसरा जासूस अंगड़ाई लेते हुए उठा और बोला —तुम दोनों ने तो अपना काम कर लिया । अब मेरी सुनो, चोर आया, चोरी करके ले गया और हम लोग सोते रहे । इससे साफ -साफ स्पष्ट हो जाता है कि चोर ने अपना काम बड़े धीरे-धीरे होशियारी से किया ।

—तुम कहना क्या चाहते हो ? साफ साफ कहो— चौथा जासूस घूरता हुआ बोला ।

—चोर धैर्यवान है ।— तीसरे जासूस ने भी अपना मत सुना दिया ।

—``ओह! तो अब मेरी बारी है । —चौथे जासूस ने गहरी सांस ली और बोला—चोर घोड़े पर आया, डाल से मोहरों की थैली खोली और आराम से चला गया । इसका मतलब चोर बड़ा अक्लमन्द है ।''—

तुम कहना क्या चाहते हो ?— पहला जासूस क्रोध से बोला ।

``चोर बुद्धिमान है । '' चौथे ने भी अपना मत व्यक्त कर दिया ।

``चोर अश्ववान है, चोर शक्तिवान है, चोर धैर्यवान है, और चोर बुद्धिमान है । अब निर्णय हो जाना चाहिये कि— चोर कौन है ? चारों एक साथ बड़बड़ाए ।

बड़ी देर तक वे मौन रहे । उनके चेहरों पर मसखरों वाले भाव थे । किन्तु उनका दिमाग तेजी से सोच रहा था ।

दो–तीन मिनट तक वे सोचते रहे फिर चारों के मुंह से एक साथ निकला चोर राजा का ...। सामने से एक राहगीर आ रहा था अतः उन्होंने अपनी बात अधूरी छोड़ दी ।

चोर का पता लग चुका था । अतः चारों जासूस गुप्त मार्ग से राजा के पास पहुँचे । चौबीस घण्टे पूरे होने को थे इसलिए राजा उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहा था ।

–कहो चोर का पता लगा ?— राजा का स्वर बड़ा गम्भीर था ।

–जी महाराज! चोर का पता लग गया ।— चारों एक साथ बोले।

–कौन है चोर ? — राजा धर्मसिंह आवेश में आ गये ।

–चोर अश्ववान है ।— पहला जासूस बोला ।

–चोर शक्तिमान है।— दूसरा जासूस बोला ।

–चोर धैर्यवान है ।— तीसरा जासूस बोला ।

–चोर बुद्धिवान है —चौथा जासूस बोला ।

–तुम लोग क्या बक रहे हो ? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है । सीधी तरह चोर का नाम बताओ । राजा धर्मसिंह को क्रोध आ गया ।

महाराज क्रोध न करें मैं अभी आपको चोर का नाम बता सकता हूँ। किन्तु पहले हमारी बात ध्यान से सुन लीजिये – एक जासूस मुस्कराता हुआ बोला।

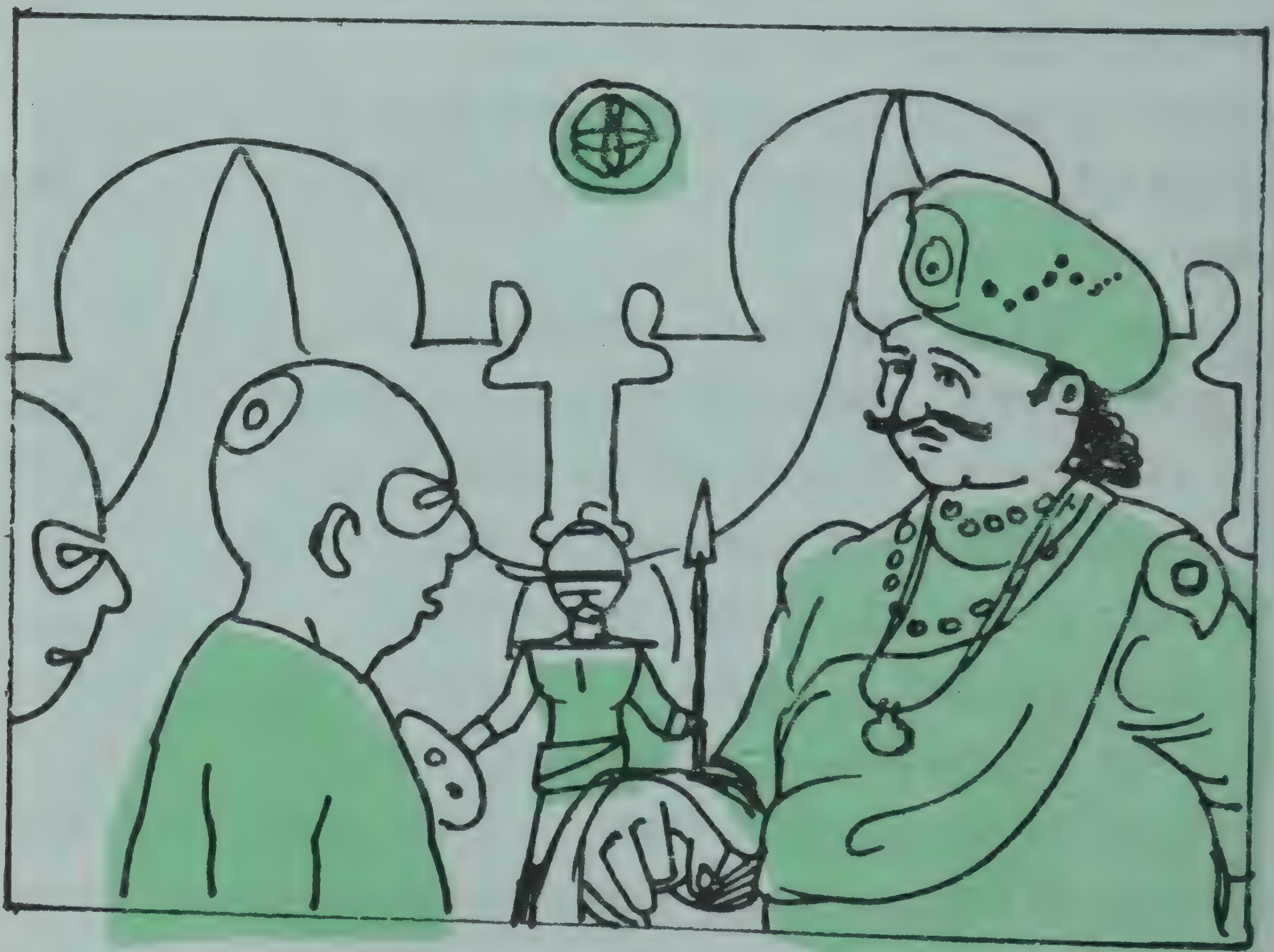
–कहो, जो कुछ कहना है शीघ्र कहो, हम जल्दी से जल्दी चोर का नाम जानने के लिए बेताब हैं।—राजा धर्मसिंह पहलू बदलते हुए बोले।

महाराज हमारे राज्य में केवल चार व्यक्तियों के पास घोड़े हैं– आप, सेनापति, राजगुरु, दीवान जी, पहला जासूस बोला।

तुम लोग पहेलियाँ क्यों बुझा रहे हो, जो कुछ कहना है साफ-साफ कहो, राजा धर्मसिंह का स्वर अत्यन्त गम्भीर हो गया था।

महाराज! आप राजगुरु और सेनापति जी बहुत शीघ्र उत्तेजित हो जाते हैं किन्तु चोर अपना कार्य बड़े धैर्य से करता है।— तीसरा जासूस बोला।

तुम लोगों की बातें मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रही हैं। सीधी तरह चोर का नाम बताओ नहीं तो मैं तुम चारों को मृत्युदंड भी दे सकता हूँ।— राजा धर्मसिंह उठकर खड़े हो गये।





—महाराज शान्त रहें, क्रोध, बुद्धि का भक्षण करता है। चोर बुद्धिमान है वह प्रतिदिन आपसे मिलता है, गंध लेता है और आपकी नाक के नीचे चोरी करता है। क्या अब भी आप नहीं समझे कि— चोर कौन है?— चौथे जासूस ने समझाते हुए अपनी बात कही।

राजा ने शान्ति से विचार किया। शीघ्र ही वे समझ गये— कि चोर कौन है, किन्तु वे जासूसों के मुख से उसका नाम सुनना चाहते थे।

—हम सब समझ गये। आप लोगों का इशारा दीवान जी की तरफ है। — राजा मुस्कराते हुए बोले।

—जी महाराज! आप ठीक समझे। अब आप शीघ्र ही उनके निवास पर सैनिकों के साथ छापा मारें। उनकी तलाशी लेने पर आपको चोरी का सब माल मिल जायेगा।

राजा धर्मसिंह ने चारों जासूसों को गुप्त मार्ग से विदा किया और तुरन्त सैनिकों को साथ लेकर दीवान के महल की तलाशी लेने पहुँचे।

दीवान घर पर ही था। उसके निवास पर चोरी का सारा सामान मिल गया। राजा की दी गयी मोहरों की थैली भी दीवान जी के पास बरामद हो गयी।

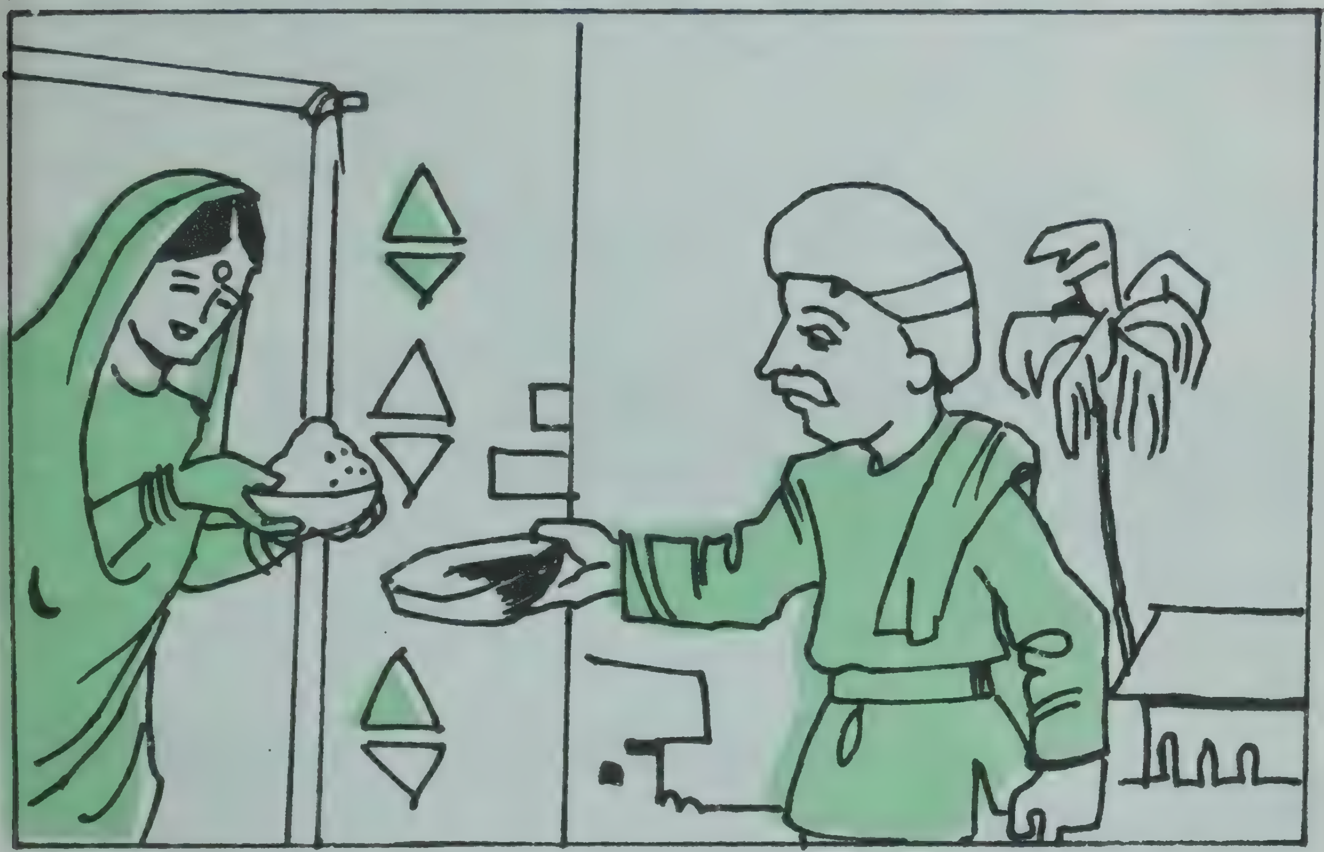
राजा धर्मसिंह ने जिसका जो धन था, उसे और दीवान जी को कारागार में डाल दिया। ■



बच्चों को कभी नकल नहीं करनी चाहिए — बाऊजी का संदेश

कहानी : चन्द्रभान निरंकारी

तमिलनाडु की लोक कथा



तमिलनाडु के एक शहर में एक कंजूस रहता था। वह कभी भी अपनी कोई चीज दूसरों को नहीं देता था। इसी से उसका नाम कोड़ामुण्डन पड़ गया। कोड़ामुण्डन का अर्थ है, अपनी चीज किसी को भी न देने वाला। कोड़ामुण्डन रोज सुबह उठकर शहर के लोगों के घर जाता और कहता—मुझे ब्राह्मणों को भोजन खिलाना है कृपया करके थोड़ा सा चावल दे दीजिए।

ब्राह्मणों के नाम पर हर घर से चावल मिल जाता था। इसी तरह वह हर रोज लगभग 15 किलो चावल इकट्ठा कर लेता था। जब ब्राह्मण उसके घर भोजन करने के लिए आते तो वह कहता, मैं आज दूसरे ब्राह्मणों को भोजन खिलाने का वचन दे चुका हूँ। आप लोग कल आइए। लेकिन उसका कल कभी न आता। इसी तरह कोड़ामुण्डन किसी को कभी एक ग्राम चीज भी नहीं देता था। वह और उसकी पत्नी बड़े मजे से अपने दिन काटने लगे।

उसी शहर में बेड़ामुण्डन नाम का दूसरा ब्राह्मण भी रहता था। बेड़ामुण्डन शब्द का अर्थ है अपनी पसन्द की चीज लेकर रहना। वह

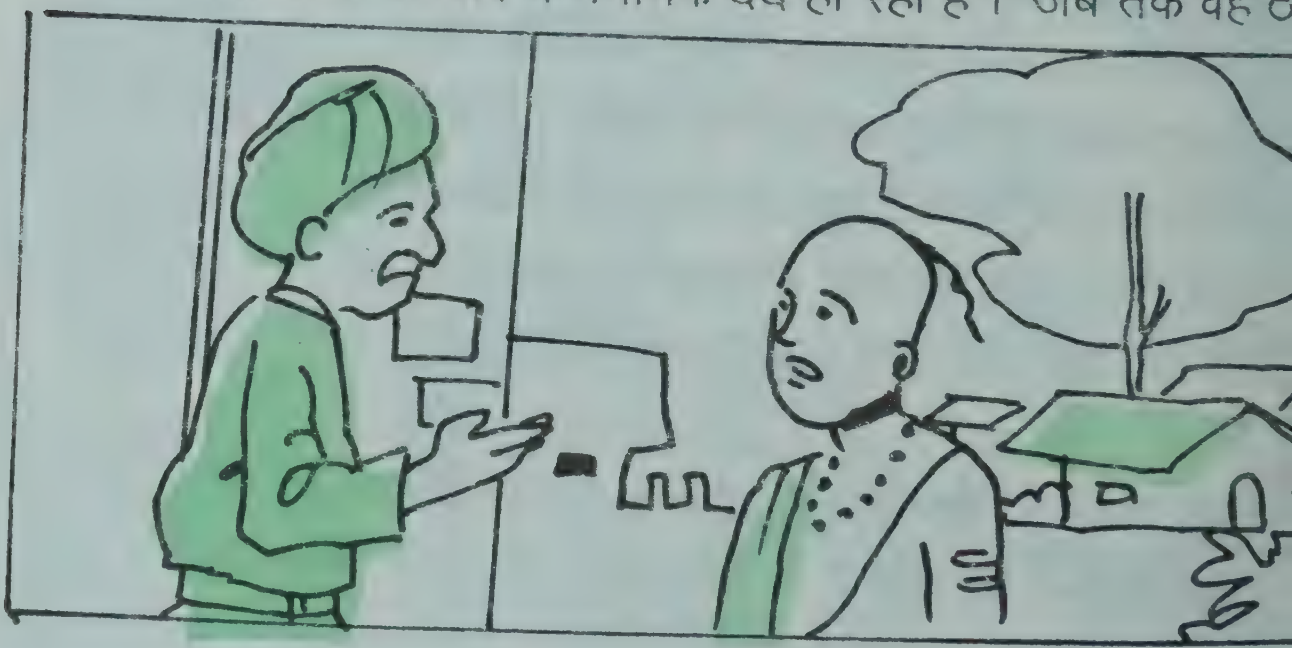
ब्राह्मण जिस वस्तु को पाने की ठान लेता उसे सचमुच लेकर ही
था। कंजूस आदमियों से चीजें लेकर उनका दिल दुःखाने में बेड़ामु
को बहुत आनन्द आता था। एक बार उसके मित्र ने उसे कोड़ामु
के बारे में बताया। उसने मन ही मन सोचा कोड़ामुण्डन मेरे सामने
बच्चा है। मैं उसके घर भोजन करके ही रहूँगा। एक दिन वह सुबह-
कोड़ामुण्डन के घर जा पहुँचा बोला, मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं अ
घर भोजन करूँ।

हमेशा की तरह कोड़ामुण्डन ने उत्तर दिया, आज मैं दस ब्राह्मण
बुला चुका हूँ। कृपया करके आप कल आइए।

अगले दिन वह सुबह फिर कोड़ामुण्डन के घर पहुँच गया और बो
श्रीमान ! आपके कहे अनुसार मैं आज आपके यहाँ भोजन करने अ
हूँ।

कोड़ामुण्डन समझ गया इस आदमी को टालना आसान नहीं
बेड़ामुण्डन को बरामदे में बिठाकर वह घर के अन्दर गया और पत्नी
सलाह मशविरा करने लगा। थोड़ी देर बाद उसे उपाय सूझा और उ
अपनी पत्नी से कहा, तुम बिस्तरे पर लेट जाओ जब वह आदमी मेरे स
अन्दर आए, तो तुम कराहने लगना। कहना, मारे दर्द के मेरा सर प
जा रहा है।

बाहर आकर उसने बेड़ामुण्डन से कहा— भाई मैंने तुम्हें आज
दिन भोजन पर बुलाया था लेकिन मैं आज तुम्हें भोजन नहीं करवा सकूँ
क्योंकि मेरी पत्नी के सिर में भयानक दर्द हो रहा है। जब तक वह ठी



नहीं हो जाती तब तक बताओ भोजन कौन बनाएगा ?

बेड़ामुण्डन बोला— यह तो बहुत छोटी-सी बात है । इसके लिए ब्राह्मण का भूखा लौटना ठीक नहीं । मैं खाना बनाना जानता हूँ । आओ, हम दोनों मिलकर भोजन बना लें । तुम्हारी पत्नी के लिए खिचड़ी भी बना दूँगा ।

कोड़ामुण्डन की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे । बेड़ामुण्डन को किस प्रकार टाले ? उसने मन में सोचा मैं उससे खाना तो बनवा लूँगा और फिर किसी तरकीब से इसे बिना खिलाए घर से भगा दूँगा ।

कोड़ामुण्डन को एक बात की खुशी थी कि उसकी पत्नी को खाना नहीं बनाना पड़ेगा वह बेड़ामुण्डन के साथ खाना बनाने लग गया । थोड़ी ही देर में खाना बनकर तैयार हो गया अब कोड़ामुण्डन बोला—घर में एक ही केले का पत्ता है तुम जाकर कहीं से दूसरा केले का पत्ता ले आओ । फिर हम दोनों मिलकर भोजन खाएंगे ।

बेड़ामुण्डन ने उसकी बात मान ली । वह केले का पत्ता लाने चला गया । बेड़ामुण्डन के चले जाने के बाद कोड़ामुण्डन अपनी पत्नी के पास गया और बोला—देखो वह आदमी पत्ता लाने गया है । जैसे ही वह लौटे तुम मेरे साथ जोर-जोर से लड़ना शुरु कर देना । जब मैं भी लड़ने लगूँ तब तुम जोर-जोर से रोना शुरु कर देना । सब कुछ देखकर वह आदमी अवश्य भाग जाएगा ।

बेड़ामुण्डन केले का पत्ता लेकर भोजन करने पहुँचा । उसे देखते ही कोड़ामुण्डन और उसकी पत्नी झगड़ा करने लगे । बेड़ामुण्डन बाहर खड़ा

(शेष पृष्ठ 40 पर)




कहानी - विनय जोशी
इस बार नववर्ष मुबारक सभी को अवश्य कहना है। अच्छा आज तो कपड़े खरीद लूँ फिर...
कपड़े की दुकान में —
आपके पास बहुत कम डिज़ाइन हैं। अच्छा चार दिन बाद आऊँगी अच्छे कपड़े लाना —
वह दुकानदार से जबरदस्ती कुछ कपड़े ले जाती है —


फिर जूतों की दुकान में-
अच्छे फैन्सी जूते दो !
हाँ ये ठीक रहेंगे....
...पर मैडम - ये तो किसी ओर के...
कोई बात नहीं... मैं पैसे ज्यादा दे दूंगी...
प्रसी तेजी से घर की ओर जा रही है उसके पीछे-पीछे कुछ लोग भी आ रहे हैं।


पहली तारीख को - पूसी नये कपड़े व फैन्सी जूते पहन कर बाजार में से जा रही है -
आज सभी लोग मेरे कपड़ों व जूतों को देखते ही रह जायेंगे !
पूसी एक घर में -
हैप्पी न्यू इयर'
पर वे लोग उसे गुस्से से देखते हैं ।


ये कमीज तो हमारी...
पड़ोस में से भी दो लोग आये और कहने लगे -
अरे ! ये जूते तो हमारे हैं !
पूसी वहां से भागती है -
घर में पहुँचकर -
बाप रे - जल्दी में - हैप्पी न्यू इयर भी नहीं कर पाई - उल्टे बुरी अलग बनी अब जल्दी नहीं मचाऊंगी !...

(पृष्ठ 35 का शेष)
हुआ सब कुछ देखता रहा। थोड़ी देर बाद कोड़ामुण्डन जोर-ज
दीवार पीटने लगा। उसकी पत्नी जोर-जोर से रोने लगी। बेड़ामु
ने सोचा इस समय घर के अन्दर जाना ठीक नहीं होगा। वह रसो
के पास वाले भंडार गृह में जाकर बैठ गया। वह इसी अवसर की प्र
में था कि कब पति-पत्नी झगड़ा बन्द करें और वह भोजन करे।

घर के अन्दर पति-पत्नी लड़ने का अभिनय करते-करते थव
थे। तब उन्होंने बाहर झांककर देखा तो वहाँ कोई नहीं था। उन्हों
की सांस ली। वह खुश होकर अपनी पत्नी से बोला—अब रोना-
बन्द करो। वह ब्राह्मण वापस चला गया। आओ अब हम आराम से भ
का आनन्द उठाएँ।



कोड़ामुण्डन ने दो पत्तों पर भोजन परोसा। खाना शुरु करने से प
वह बोला—देखो आज मैंने तुम्हें बिना मारे कैसे पीटा।

और पत्नी बोली—मैं भी पीटे बिना कैसे चीख-चीखकर रो
थी।

रसोईघर के पास छिपकर खड़ा बेड़ामुण्डन तुरन्त उनके पास प
और बोला—देखो, मैं भी घर से गए बिना लौट आया हूँ। ऐसा कह
वह एक पत्तल के सामने जा बैठा। कोड़ामुण्डन को उसको जबरद
भोजन खिलाना पड़ा। बेड़ामुण्डन ने छककर भोजन किया। बे
कोड़ामुण्डन तथा उसकी पत्नी बेड़ामुण्डन का मुँह ताकते रह गये

—कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि 'सेर
सवा सेर' आखिर मिल ही जाता है।

डॉ. अंकल के उत्तर

❑ डॉ. कुंदन कुमार

– अशोक सागर (तरावड़ी)

प्रश्न : डॉ. अंकल मुझे थकावट बहुत ज्यादा रहती है। कोई भी छोटा सा काम कर लूँ तो मुझे थकावट हो जाती है। कहीं पैदल चलना पड़े तो बहुत थक जाता हूँ। कृपया कोई उपाय बताएँ?

उत्तर : अश्वगंध की जड़ 50 ग्राम, विधारा की जड़ 50 ग्राम लेकर कूट पीसकर आधा चम्मच सुबह-शाम शहद से लें। लाभ होगा।

– प्रवीण (पटियाला) अभय कुमार (पटियाला)

प्रश्न : डॉ. अंकल मेरा बिस्तर में हर रोज रात को पेशाब निकल जाता है सभी इलाज कर लिए। कृपया इस का इलाज बताएँ?

उत्तर : जामुन की गुठली, पहाड़ी सौंफ दोनों को बराबर भाग में मिलाकर कूटपीस कर कपड़-छान कर लें। आधा चम्मच को पानी से लें। अवश्य लाभ होगा।

— राम कुमार मेश्राम (बीरुटोला), अभय कुमार (पटियाला), आरजू, (लुधियाना), सुखपाल सिंह (रेवाड़ी) पिंकी श्रीवास्तव (पांडेपुर)

प्रश्न : हमारी आयु 18 से 30 के करीब है। हमारी कमर, पीठ व पेट में दर्द रहता है। कृपया कोई सरल उपाय बताएं? और नाखून काटने की बहुत गन्दी आदत है। इससे छुटकारा दिलवाएँ।

उत्तर : महायोगराज गुग्गल व महाशंख वटी एक-एक गोली सुबह-शाम जल से लें। लाभ होगा। नाखून काटने की आदत छुड़ाने के क्लोरोक्वीन की गोली आधा कप पानी में मिला लें। नाखुनों पर उसका पानी सुबह-दोपहर शाम लगायें।

—सरिता (अकोला)

प्रश्न : डॉ. अंकल, मुझे मुल्तानी मिट्टी खाने की बुरी आदत है एक दिन में ही बहुत सारी खा जाती हूँ इससे छुटकारा पाने के लिए कोई सरल उपाय बताएँ ?

उत्तर : फिफोल (Fefol) का एक कैपसुल रोज लें। लाभ होगा।

समाचार

पानी को शुद्ध करने वाला पेननुमा यन्त्र

एक्वाटेक इंटरनैशनल ने 'एक्वापेन' नामक एक यंत्र बनाया है, जो कि पानी को करता है।

यह इलैक्ट्रानिक जल शुद्धिकरण यंत्र पानी में रखने पर 'सितवर आयरन' है। इससे पानी में मिले हुए जीवाणु मर जाते हैं। पानी को शुद्ध करने में इसे मा सेकिण्ड का समय लगता है। कुओं आदि अज्ञात स्रोतों से निकलने वाले जल को मात्र 50 सेकिण्ड में शुद्ध कर देता है।

देश का पहला क्रीड़ा आघात क्लीनिक

पिछले दिनों केंद्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री, महोदय ने देश के पहले आघात क्लीनिक का उद्घाटन स्थानीय सफदरजंग हस्पताल में किया। मंत्री महोदय के अब हमारे खिलाड़ियों को इलाज के लिए विदेश नहीं जाना पड़ेगा बल्कि अब उपचार तुरन्त मिल जाने से खिलाड़ी देश का गौरव और बढ़ा पायेंगे।

प्रदूषित देशों में अमेरिका प्रथम, भारत का छठा स्थान

अमेरिकी समाचार पत्र 'वाशिंगटन पोस्ट' में कहा गया है कि वायुमंडल में मौजूद 'क डाइ ऑक्साइड' में अमेरिका का हिस्सा करीब 5000 मीट्रिक टन है, जबकि भारत का 769 मीट्रिक टन है। इस प्रकार अमेरिका विश्व का सर्वाधिक प्रदूषित देश है। चीन रूस तीसरा, जापान चौथा व जर्मनी पाँचवाँ देश है व भारत छठे स्थान पर है।

विश्व को रहने योग्य बनाये रखने के लिए पर्यावरण के प्रति सचेत रहने और प्र रोकने के प्रभावी उपाय करने की आवश्यकता है।

बेकार चीजों से खिलौने बनाने में माहिर

कक्षा 6 के विद्यार्थी विशाल ने पुरानी रद्दी चीजों से अनेक खूबसूरत खिलौने हैं। घर में पड़े फालतू गत्तों, अखबारी कागज, खाली माचिस की डिब्बी, धागे का आदि अनुपयोगी माने वाली चीजों से विशाल सेल्यूलर फोन, स्कूटर, ओपन जीप, जहाज आदि बना लेता है।

रचनात्मक प्रतीभा का स्वामी विशाल बड़ा होकर पायलट बनना चाहता है। उसका चित्र व कार्टून बनाने में भी बहुत लगता है। वह अपने साथी बच्चों की भी अपनी प्र से मदद करता है। जिससे सभी उसे प्यार करते हैं।

नन्ही हैरतअंगेज : शख्सियत इब्राहीम

आठ वर्षीय नन्हे बालक इब्राहीम ने जिसने अंग्रेजी भाषा के पर्याप्त ज्ञान के अभाव में कम्प्यूटर पर अपनी उंगलियों से करतब दिखाकर लातादाद लोगों को हैरत में डाल दिया है। यद्यपि कम्प्यूटर के 'की-बोर्ड' पर लगे बटनों पर अंग्रेजी जुबान के शब्द अंकित है, लेकिन नन्हा इब्राहीम 'कुरान-शरीफ' के मुखतलिफ पारो (अध्यायों) में उल्लिखित प्रत्येक शब्द की संख्या को पलभर में कम्प्यूटर से बताकर लोगों में उत्सुकता पैदा कर देता है।

संजय कुमार सम्मानित

श्रीफूलचन्द के सुपुत्र श्री संजय कुमार निवासी शिव कालोनी, करनाल ने 22-6-97 को सायं 6.30 बजे अपनी जान की परवाह न करते हुए यमुना नदी में छलांग लगाकर एक 8-9 वर्ष के बच्चे को डूबने से बचाया है। इस सराहनीय कार्य के लिए करनाल के उपायुक्त महोदय ने 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर संजय कुमार को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया है।

मूलियों से आकर्षक मूर्त्तियाँ

कुशवाहा एक ऐसे कलाकार हैं जो खाने वाली मूली से आकर्षक मूर्त्तियां को निर्मित करते हैं। कभी शहीद भगतसिंह, आजाद, सुखदेव नजर आते हैं तो कभी महात्मा गाँधी, शास्त्री जी, नेहरु जी नजर आते हैं तो कभी भगवान कृष्ण, राम और अन्य देवी देवताओं की झाँकियाँ नजर आती हैं।

श्री हरि राम कुशवाहा को गणतंत्र दिवस और स्वाधीनता दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन की ओर से मूलियों से निर्मित उनकी झाँकियों के लिए प्रमाण-पत्र और पुरस्कार मिल चुके हैं।

डा. देशबन्धु 'शाहजहांपुरी' पुरस्कृत

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ के तत्वावधान में प्रतिवर्ष दिए जाने वाले पं. प्रताप नारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार पुरस्कारों के अन्तर्गत, बाल साहित्य विधा का, वर्ष 1997 का पुरस्कार, सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार एवं 'हँसती दुनिया' के लेखक डा. देशबन्धु शाहजहांपुरी को उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री माननीय कल्याण सिंह के सान्निध्य में गत 6 सितम्बर 97 को संजय कम्युनिटी हाल, बरेली में प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप डा. शाहजहांपुरी को तीन हजार एक सौ रुपये की सम्मान राशि, अंग वस्त्र, प्रतीक चिन्ह, सरस्वती प्रतिमा, प्रशस्ति पत्र, पं. प्रताप नारायण मिश्र द्वारा लिखित साहित्य तथा भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित साहित्य भेंट किया गया।

— राम कुमार सेवक द्वारा

पढ़ो और हँसो

एक आदमी : मैं अगले वर्ष दहेज विरोधी आंदोलन में भाग लूँगा।

दूसरा आदमी : अगले वर्ष ही क्यों? इस वर्ष क्यों नहीं ?

पहला आदमी : क्योंकि इस वर्ष मेरी शादी है ।

– धनंजय साबके (औरंगाबाद)

माँ : नीचे की मंजिल वाले नल के पानी को ऊपर चढ़ने ही नहीं देते। पानी कैसे आये ?

बच्चा : माँ इस बार जब पानी ऊपर चढ़े तो तुम उसे उतरने मत देना ।

–प्रहलाद जसवानी (मंडला)

फिल्म निर्माता : आपकी हॉबी क्या है ?

अभिनेता : घुड़सवारी ।

निर्माता : पिछली बार कब घोड़े पर बैठे थे ?

अभिनेता : करीब चार वर्ष पहले अपनी शादी के अवसर पर ।

–रेणुका निरंकारी

पाली ने मोगली से पूछा : मोगली तुम यह कैसे साबित कर सकते हो कि जानवरों की आँखें मनुष्य से ज्यादा तेज होती हैं ?

मोगली : क्या तुमने कभी किसी जानवर को चश्मा लगाते हुए देखा है?

– केवल सिंह, रानी कलेर, रोड़ी (सिरसा)

बड़ा भाई छोटे भाई से : कल मैंने जो गणित के सवाल किए थे, तुमने अपने अध्यापक को दिखाए?

छोटा भाई : हाँ दिखाए ।

बडा भाई : क्या बोले ?

छोटा भाई : वह बोले, मैं तुम्हारे भाई की भूल की सजा तुम्हें नहीं देना चाहता।

\+ \+ \+

कमांडर : (सिपाही से) तुम परेड में दो मिनट लेट क्यों आए?

सिपाही : साहब, आज मैं थोड़ी देर से उठा तब परेड में पन्द्रह मिनट बाकी थे । मैंने बहुत जल्दी की फिर भी दो मिनट लेट हो गया।

कमांडर : पन्द्रह मिनट? पर मैं तो सिर्फ दस मिनट में तैयार हो जाता हूँ।

सिपाही : पर हुजूर मैं नहीं हो सकता ।

कमांडर : क्यों नहीं हो सकते ?

सिपाही : क्योंकि मुझे नहाना भी होता है ।

— आशीष कुमार दड़िया (छऊ)

एक मंत्री महोदय चुनाव से पहले एक गाँव में गए जहाँ गंदगी फैली हुई थी । उन्होंनें गाँव वालों से पूछा—क्यों भाई, कोई सफाई कर्मचारी नहीं आता क्या?

—आता है श्रीमान हर पाँच साल बाद— जवाब मिला ।

– लखबीर सिंह चीमा

महिला (भिखारी से) : भीख माँगने के लिए इतना पैदल चलते हो, थक नहीं जाते ?

भिखारी : सोचता तो हूँ एक कार ही खरीद लूँ ।

– सरिता चौधरी (दिल्ली)

डाक्टर : (मरीज को) तीन चम्मच सुबह और तीन चम्मच शाम को दूध के साथ खा लेना ।

मरीज : चम्मच कौन सा पीतल का या स्टील का?

– अशविन्द्र कौर (लुधिआना)

भिखारी : माताजी एक रुपया दे दो रोटी खाऊँगा ।

महिला : रुपया तो नहीं है पर मैं तुझे रोटी जरूर खिला सकती हूँ ।

भिखारी : हाय भगवान! एक रुपया पाने की कोशिश में मैं पिछले दो घंटों से आठ रोटीयाँ खा चुका हूँ ।

— वन्दना चौधरी (दिल्ली)

अक्टूबर अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम	:	रोहित सचदेवा जे.सी. / 43 डी. एल.आई.जी. फलैट्स मायापुरी, नई दिल्ली-110064	आयु 11 वर्ष
द्वितीय	:	नैना कुमारी 4 एफ टी 29, सेक्टर 4, ओबरा कालोनी सोनभद्र (यू.पी.) 231219	आयु 12 वर्ष
तृतीय	:	करुणा कुमारी फलेट नं. 13, प्लाट नं. 100 निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009	आयु 8 वर्ष

इन बच्चों को हँसती दुनिया परिवार की ओर से पुरस्कार भेजा जा रहा है।

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं — अभिलाष अरोड़ा (सरिता विहार, नई दिल्ली),चेतन आसवानी (हल्द्वानी, नैनीताल), इला गुप्ता (इटावा),अंकुर शर्मा (चण्डीगढ़), दिव्या सचदेवा (माया पुंरी, नई दिल्ली), सचिन कुमार (यमुना नगर), शेफाली खन्ना (तिलक नगर नई दिल्ली), शरद जैन (गोरेघाट, बाला घाट), पुष्पेन्द्र सिंह (मारूती विहार, गुड़गाँवा)

जनवरी अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भर कर 30 जनवरी तक हँसती दुनिया कार्यालय में भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जायेंगें।

पुरस्कारों की घोषणा हँसती दुनिया के मार्च अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता साफ-साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं।

पुरस्कारों के विषय में 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का फैसला अन्तिम और मान्य होगा।

रंग भरो



नाम .... आयु ....

पूरा पता ....

....

....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क मात्र 30/- रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 300/- रुपये है। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर आदि द्वारा भेज सकते हैं—

सचिव,
(प्रकाशन विभाग)
सन्त निरंकारी मण्डल
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

नोट : चैक/ड्राफ्ट आदि सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ-साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट न्म्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें।
- यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।

कहानी : प्रकाश चन्द्र अग्रवाल

जुलाहा और भाग्य

किसी नगर में एक जुलाहा रहता था। वह राजाओं की पसंद के तरह-तरह के रेशमी कपड़े तैयार किया करता था। लेकिन फिर भी उसे अधिक धन नहीं मिलता था। वह किसी तरह अपने परिवार का पेट भर पाता था। लेकिन जो जुलाहे साधारण मोटा कपड़ा बुनते थे उनके पास काफी धन था। यह देखकर वह एक दिन अपनी पत्नी से बोला—मैं अब यहाँ नहीं रह सकता। कहीं परदेस में जाकर धन कमाऊँगा।

जुलाहे की पत्नी बोली—दूसरी जगह जाने पर धन मिलता है और जहाँ रहते हैं वहाँ नहीं मिलता यह बिल्कुल झूठी बात है क्योंकि जो नहीं होने वाला वह नहीं होता और जो होने वाला होता है वह बिना कोशिश के ही हो जाता है। इसलिए कहीं दूसरी जगह न जाकर तुम यहीं रहकर कोशिश करो।



जुलाहे ने जवाब दिया—तुम्हारा कहना ठीक नहीं। बिना मेहनत कुछ नहीं होता। लक्ष्मी मेहनत करने वालों को मिलती है। भाग्य के भ तो सिर्फ कायर-आलसी लोग ही रहते हैं। सिर्फ सोचने से कुछ नहीं हो मेहनत करने से सब कुछ होता है। इसलिए मुझे परदेस जाना चाहिए।

आखिर हारकर पत्नी ने उसे नहीं रोका। जुलाहा अपना देश छोड़ वर्धमान नामक नगर की तरफ चल पड़ा। वहाँ वह तीन वर्ष रहा और त सौ मोहरें कमाकर घर की ओर लौटा।

रास्ते में एक जंगल था। जिस समय उसने जंगल में प्रवेश कि सूर्यास्त हो चुका था। जंगली जानवरों के भय से वह एक बरगद के पर चढ़ गया और उसकी एक डाल पर सो गया। आधी रात में उ सपना देखा। सपने में दो आदमी बात कर रहे थे। उनमें से एक बोला— कर्म ! क्या तू नहीं जानता कि इस जुलाहे के भाग्य में सिर्फ रोटी-कप के लिए ही धन लिखा है फिर तूने इसे तीन सौ मोहरें क्यों दी ?

वह बोला —हे भाग्य ! जो मेहनत करते हैं उन्हें मुझे देना चाहिए। लेकिन इसका क्या परिणाम हो यह तेरे हाथ में है।



जुलाहे की जब नींद खुली तो उसने अपनी मोहरों की पोटली टटोली वह खाली थी। इस पर दु:खी होकर वह सोचने लगा—अरे! यह क्या? जो धन मैंने इतनी तकलीफ उठाकर कमाया था वह कहाँ चला गया? मेरी पूरी मेहनत बेकार हो गयी। अब मैं इस गरीबी की हालत में अपनी पत्नी और मित्रों को अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा।

यह सोचकर वापस उसी शहर में लौट गया और एक साल में उसने पाँच सौ मोहरें कमाई। वह फिर अपने घर की तरफ लौटा। रास्ते में वही जंगल पड़ा। शाम का ही समय था। यद्यपि वह बहुत थका हुआ था पर



मोहरें खो जाने के डर से सोया नहीं बल्कि जल्दी-जल्दी जंगल पार करने लगा। उसी समय दोनों व्यक्ति फिर आमने-सामने आये और बातचीत करने लगे।

भाग्य बोला—हे कर्म! तूने इसे पाँच सौ मोहरें क्यों दी? क्या तू नहीं जानता, इसके भाग्य में रोटी-कपड़े से ज्यादा कुछ नहीं लिखा है।

कर्म बोला—हे भाग्य! मेहनत करने वालों को मैं फल अवश्य देता हूँ पर उसका क्या परिणाम हो यह तो तू ही जानता है। यह सुनकर जुलाहे ने अपनी पोटली देखी तो उसमें मोहरें न थीं। इससे वो बहुत दु:खी हो उठा और सोचने लगा—मुझ जैसे कंगाल के जीने से क्या लाभ? अत:

मैं बरगद के पेड़ से फाँसी लगाकर मर जाऊँगा। उसने फिर एक रस्सी तैयार की। उसका फंदा बनाकर अपने गले में डाल दिया। तभी अचानक आकाश में उड़ रहे एक व्यक्ति ने कहा—अरे, अरे, ऐसा मतकर। तेरा धन हर लेने वाला मैं ही हूँ क्योंकि तेरे भाग्य में सिर्फ रोटी-कपड़ा ही लिखा है इसलिए तू अपने घर जा। फिर भी मैं तेरे साहस पर बहुत खुश हूँ तू मन चाहा वर माँग।

जुलाहे ने कहा—तो ठीक है मैं वर माँगता हूँ। आप मुझे बहुत सा धन दे दीजिए।

उस आदमी ने कहा—अरे ! जो धन लेकर तू उपयोग न कर सके उस धन को लेकर क्या फायदा ? तेरे भाग्य में रोटी-कपड़े से अधिक नहीं लिखा है।

जुलाहा बोला, चाहे मैं उसका उपयोग न कर सकूँ फिर भी मुझे धन चाहिए क्योंकि जिसके पास धन हो उसे सब घेरे रहते हैं। यह सुनकर भाग्य बोला—अच्छा, अगर यह बात है तो तू वापस वर्धमान जा। वहाँ दो बनिये रहते हैं। एक का नाम छिपा धन व दूसरे का खुला धन है। तू जब उन्हें पहचान ले तो उन में से एक की तरह का बनने का वर माँग लेना। यह कहकर भाग्य आकाश में अदृश्य हो गया।



आश्चर्य में डूबा जुलाहा फिर वर्धमान पहुँचा। उसने छिपा धन का पता लगाया और उसके घर पहुँचा। पर तब तक दिन ढल गया था। छिपा धन ने उसका आदर सत्कार नहीं किया। फिर भी जुलाहा उसके घर में जबरदस्ती घुस गया। तब छिपा धन ने थोड़े आदर के साथ उसे कुछ खाने को दिया।

जुलाहा वहाँ सो गया। उसे सपने में फिर वे दोनों व्यक्ति दिखाई दिये। वे आपस में सलाह-मशवरा कर रहे थे।

भाग्य बोला—हे कर्म ! तूने छिपा धन के लिए इस खर्चे का इंतजाम क्यों किया। यह तूने ठीक नहीं किया।

कर्म बोला—हे भाग्य ! इसमें मेरा कोई दोष नहीं मैं तो मनुष्य का फायदा ही करता हूँ। हाँ, उसे फल देना तेरे हाथ में है। सवेरे जब जुलाहा उठा तो उसने छिपा धन को बीमार पाया। जिसकी वजह से वह खाना नहीं बना सकता था। अतः जुलाहे ने अब यहाँ से चलना ही ठीक समझा। वह खुला धन के घर पहुँचा। खुले धन ने जुलाहे का काफी आदर





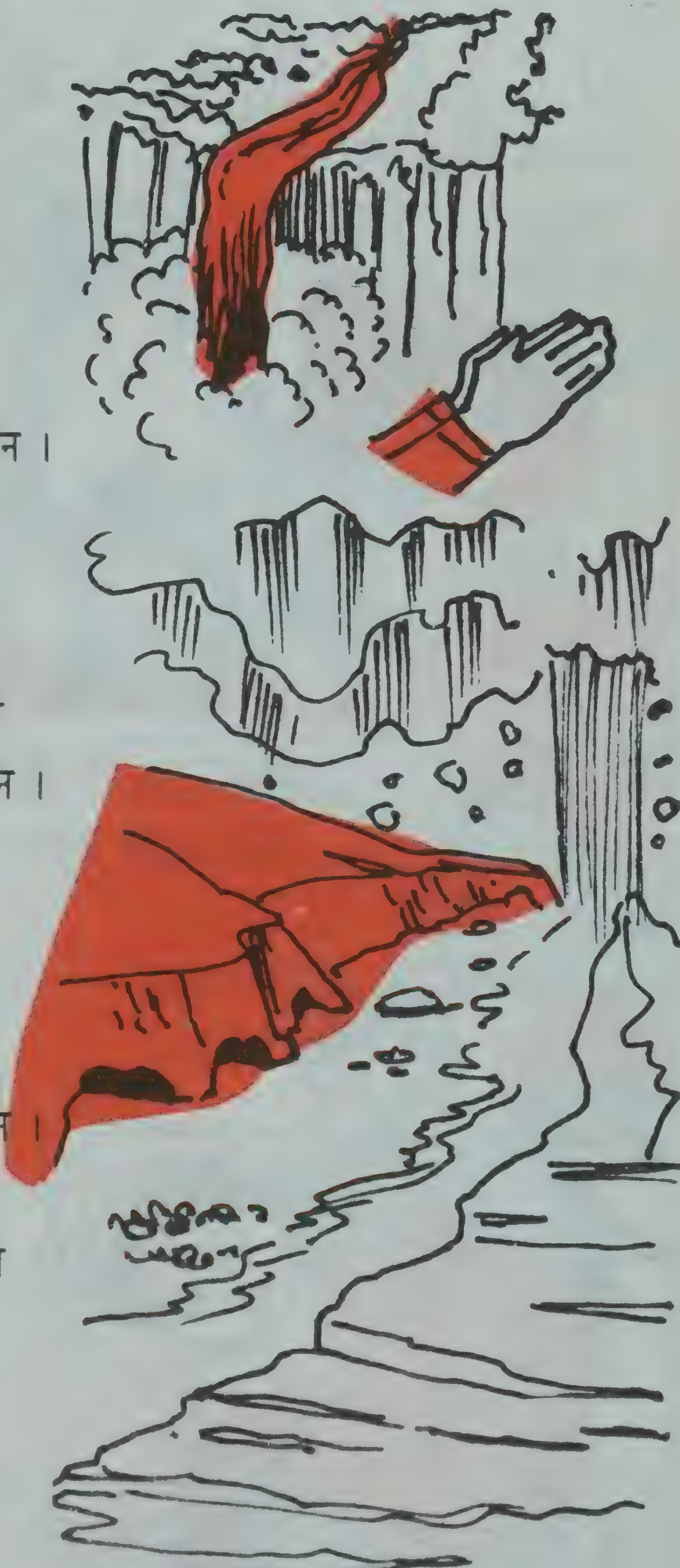
सत्कार किया। उसे भोजन व वस्त्र दिये। बाद में जुलाहा वहाँ सो गया। आधी रात में उसने सपने में फिर वही दोनों व्यक्तियों को बातचीत करते देखा। भाग्य बोला—खुला धन ने जुलाहे के स्वागत सम्मान पर बहुत खर्च कर दिया। यह धन वह बनिये से उधार लाया था। अब वह कैसे चुकाएगा?

कर्म बोला—यह मेरा काम है पर फल देना तेरा काम है। प्रातःकाल एक राजाधिकारी खुला धन के सामने आया और उसे राजा का इनाम लाकर दिया। उसे देखकर जुलाहा सोचने लगा, खुला धन, छिपा धन से ज्यादा अच्छा है। इसलिए हे भाग्य, तू मुझे खुला धन बना। मैं छिपा धन नहीं बनाना चाहता। जब जुलाहे ने यह वर माँगा तो भाग्य ने वैसा ही बना दिया।

—कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु कर्म करने वाले को मन चाहे वर मिल ही जाते हैं और भाग्य को बदलने पर मजबूर कर देते हैं। जो भी धन काम में न लाया जा सके उसका होना भी निर्थक है। वह आफत के समान है। धन तो वो अच्छा है जो दूसरों के काम आये। ■

कविता : कौशल्या अग्रवाल

कमनीय शोभनीय वंदनीय परम



कमनीय शोभनीय बंदनीय परम
मातृभूमि को हम करें नमन ।।
ब्रह्माण्ड में जैसे है पृथ्वी ।
शिखरों में है जैसे हिमगिरी ।
जननी जन्म भूमि यह मेरी
शोभित है धरती पर ऐसी ।
करें हम इसका नित पूजन अर्चन ।
मातृभूमि को हम करें नमन ।।
कितने ही आघात यह सहती ।
वज्र से तीव्र प्रहार है सहती ।
बम के जलते अंगार यह सहती
ममता धैर्य का है अद्भुत मिलन ।
मातृभूमि को हम करें नमन ।।
मानव हो या जड़ चेतन
कोटि प्राणी का इसमें संगम ।
सागर सरिता शैल ताल का
खिलता जाता यहाँ सुन्दर उपवन ।
मातृभूमि को हम करें नमन ।
परिचय नहीं यहाँ किसी धर्म का
मूल्य नहीं है किसी अर्थ का
भेद नहीं यहाँ जात पात का
करती सब पर यह स्नेह सिंचन
मातृभूमि को हम करें नमन ।।


मास्टरजी
कहानी-विनय जोशी
चित्रांकन - मनीष
मास्टरजी !
वर्ष पर
सुनाइये
आओ बच्चो बैठो - तुम्हें राहुल देव की बात सुनाऊँ।
एक साधारण परिवार में उसका जन्म हुआ था !


आम लोगों की तरह ही वह स्कूल में भी गया।
वहाँ के बच्चे - गुल्ली डण्डा - व कंचे (बिलोरियाँ) खेलते। आपस में लड़ते झगड़ते रहते पर राहुल उनसे अलग था।
उसने एक बार सोचा - मैं नववर्ष - पर अपनी एक बुराई को छोड़ दूँगा। इस बार मैं कन्चे खेलने छोड़ दूँगा।


फिर अगले वर्ष... मैं
गालियाँ देनी छोड़ दूँग
फिर मैं प्रण करता हूँ
सबसे मीठी भाषा
में बात करूँगा।
और फिर आज से मैं खूब
मन लगाकर पढ़ूँगा।



इस तरह वह नव वर्ष
पर एक अच्छी आदत
अपनाने का प्रण करता है -
कुछ ही वर्षों में वह अपने स्कूल व मोहल्ले का
सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति बन गया अब उसे सब राहुल देव
कहते हैं - वह कहता है- नव वर्ष को संकल्प वर्ष के
रूप में मनाओ -
2 X 2
+ ÷

दो बाल गीत : दिनेश 'दर्पण'

अमर कहानी



भारत तेरी अमर कहानी--
कहती है यों बूढ़ी नानी,
भारत का हर बच्चा बच्चा
त्यागी और राष्ट्र अनुरागी,
इस माँ के आँचल का साया
जिस पर पड़ती उसकी छाया।
वह हो जाता आज निहाल।
कभी झुके न उसका भाल
करो प्रतिज्ञा कभी झुके ना
अपनी भारत माँ का मस्तक,
नया सवेरा आज हुआ है
देने को भारत में दस्तक।

तितली रानी, बड़ी सयानी



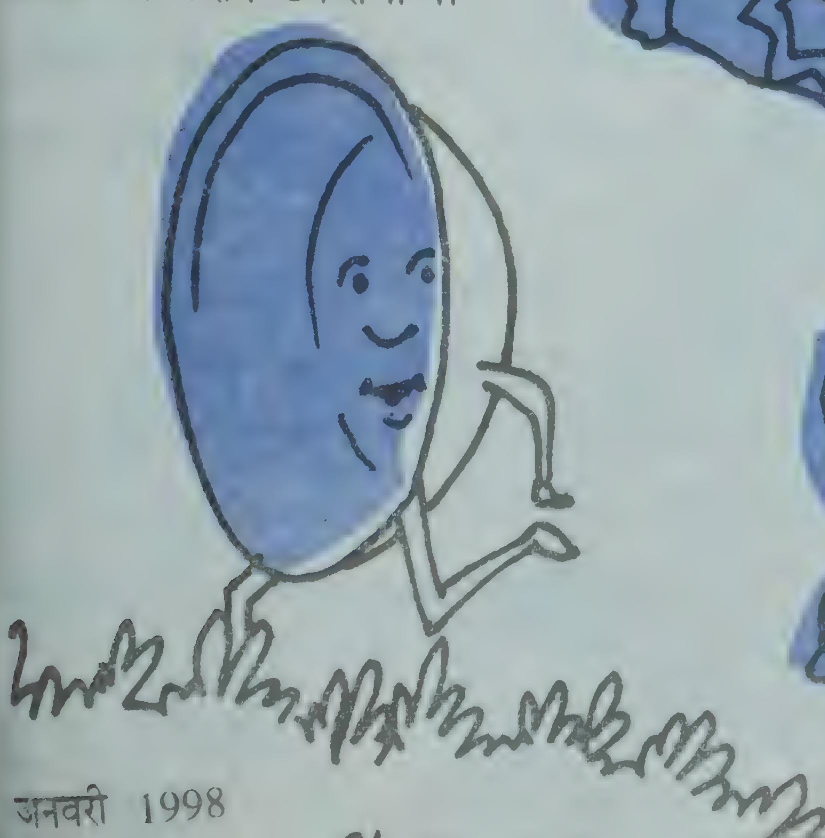
तितली रानी तितली रानी,
दूर-दूर क्यों जाती हो,
पास हमारे आकर के तुम
संदेश खुशी का लाती हो।
रंग बिरंगे पंख तुम्हारे--
सबके मन को भाते हैं,
जहाँ कहीं बच्चे जब देखें--
पीछे दौड़ लगाते हैं।
दौड़-दौड़कर थक जाते
पकड़ न तुमको पाते हैं,
चंपा, चमेली, गेंदा, गुलाब
सब ही तुम्हें बुलाते हैं।

कविता : संजय घेवरिया 'पुष्प'

हँसते-गाते जाड़ा आया

हँसते-गाते जाड़ा आया ।
बरखा को उसने टरकाया
धूप मखमली को सजाये
कलियों पर मोती बिखराये ।
सूरज दादा लगे चमकने
हो संबंधी जैसे अपने
किरणों को उसने नरमाया
हँसते गाते जाड़ा आया ।
ठंडी हवा का झोंका आये ।
सर्द पवन तन में चुभ जाये ।
भाया स्वेटर-मफलर-कोट
छिपे सूरज कोहरे की ओट
होले होले वह मुस्काया ।
हँसते गाते जाड़ा आया ।
बरखा को उसने टकराया ॥





ज्ञान-विज्ञान : प्रो. परशुराम शुक्ल

किचन कम्प्यूटर

आधुनिक विज्ञान जगत का सबसे विलक्षण आविष्कार है – कम्प्यूटर । वर्तम युग को यदि कम्प्यूटर युग कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी । अब तो जीवन शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र बचा हो, जिसमें कम्प्यूटर ने प्रवेश न कर लिया हो । कम्प्यू लाखों-करोड़ों के हिसाब करता है, एक भाषा के लेख को दूसरी भाषा में अनुवाद क है, मानसिक विकलांगों की विकलांगता दूर करता है, ड्राइंग बनाता है, शतरंज खेल है, और भी एक से एक विलक्षण कार्य करता है । वास्तव में कम्प्यूटर एक तकनी है । इसका प्रयोग जिस यंत्र के साथ किया जाता है उसे कम्प्यूटराइज्ड कहते हैं । आजक की आधुनिकतम घड़ियाँ, रेडियो, कार, टेलीविजन, हवाई जहाज, राकेट तथा युद्ध काम आने वाले प्रक्षेपास्त्र आदि में उच्च कम्प्यूटर तकनीक का प्रयोग हो रहा है

पश्चिमी देशों में विशेषकर वैज्ञानिक दृष्टि से उन्नतशील देशों में किचन में क आने वाले अनेक उपकरण भी कम्प्यूटराइज्ड होते जा रहे हैं–कुकिंग रेंज, बेकिंग रें ग्रील, मिक्सर, ग्राइन्डर आदि । इन उपकरणों ने गृहणियों के कार्य को अत्यधिक स बना दिया है । फिर भी कुछ काम ऐसे बच गये थे, जिन्हें गृहणियाँ बोझ समझ थीं । उदाहरण के लिए किचन का मासिक बजट बनाना, कौन-सा सामान कब और कित आयेगा? किचन में क्या है? और क्या नहीं है? कब कौन सा मेहमान आयेगा अ उसके लिए क्या चीजें बनानी होंगी? आदि।

गृहणियों की इन समस्याओं को जर्मनी की एक व्यवसायिक कम्पनी ने एक न कम्प्यूटर बनाकर हल कर दिया है । इस नये कम्प्यूटर का नाम है–किच कम्प्यूटर ।

किचन कम्प्यूटर गृहणी के साथ एक कुशल सहयोगी की तरह कार्य करता है यह बजट के हिसाब से किचन का सामान तय करता है समाप्त होने वाले सामानों क सूचना देता है, इसके साथ ही घर के प्रत्येक सदस्य की पसन्द के खाने का पूरा ख्या रखता है । यदि घर में पूर्व परिचित मेहमान आने वाले हों तो उनकी पसन्द भी बता है । आप कुछ भी भूल सकती हैं किन्तु किचन कम्प्यूटर कभी नहीं भूलता तथा आपक सही समय पर सब याद दिला देता है ।

कविता : कौशल्या अग्रवाल

उठो हिन्द के नन्हें वीरों

उठो हिन्द के नन्हें वीरों,
मिलकर अपने कदम बढ़ाओ ।
चमक उठे यह सारे जग में,
ऐसा उज्ज्वल रूप बनाओ ।
प्रेम की दिव्य ज्योति जगाओ,
मानवता का राग सुनाओ ।
संकुचित मन की कंदराओं से
जन जन को उन्मुक्त कराओ ।
तोड़ के बंधन जाति धर्म के,
कवच एकता का पहनाओ ।
निज की भाषा, निज की बोली,
मन को भी स्वतंत्र बनाओ ।
अन्याय आतंक मिटाकर
देशप्रेम की लौ जलाओ ।
सहयोग शान्ति को अपनाकर
बंधुत्व का तुम संदेश सुनाओ ।
सत्य अहिंसा के अनुगामी
जय भारत जय भारत गाओ ।





आपके पत्र मिले

सर्वप्रथम मैं आपको 'हँसती दुनिया' के कुशल संपादन के लिए बधाई देता हूँ। इसकी कहानियाँ, कविताएँ, लेख आदि सभी बच्चों के बौद्धिक विकास में सक्षम हैं। 'हँसती दुनिया' अक्टू. ९७ में प्रकाशित प्रो. पी. आर. शुक्ल की कहानी 'मोती की सच्चाई' और अंशु शुक्ल का लेख 'विश्व की प्रथम रेलगाड़ी रोचक एवं आकर्षक रचनायें हैं। कुमार अनिल की कहानी 'स्पेशल हलवा' भी पसंद आई। विद्वान रचनाकारों को बधाई।

–कुमार अभिषेक (भोपाल)

हंसती दुनिया अंक अक्टुबर ९७, पढ़कर बहुत मजा आया। वास्तव में 'हँसती दुनिया' एक विशेष अंक है इसकी रचना कहानी, दादा के उत्तर, डा. अंकल के उत्तर, एवं सदाबहार कविताएँ ने इस हंसती दुनिया की मांग बढ़ा दी है।

इसके अलावा 'पढ़ो और हंसो' भी हमें हँसा-हँसा कर टैंशन रहित करती है। दातार से प्रार्थना है यह पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँच पाये।

–ओम सिंह पंवार (ब्यावर)

मैं हँसती दुनिया की नियमत पाठिका हूँ। इसमें मुझे पूसी, डाक्टर अंकल के उत्तर, पढ़ो और हंसो, दादा के उत्तर, कहानियाँ सभी रोचक लगते हैं तथा इसमें समाचारों से हमें ज्ञान भी मिलता है। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि हँसती दुनिया नियमित आगे बढ़ती रहे और हमें इसी तरह ज्ञान एवं मार्गदर्शन लेती रहे।

–रजनी निरंकारी (वड

मेरे भैया ने मुझे अक्टूबर माह पत्रिका पढ़ने के लिए दी। मुझे मालूम था कि इतनी छोटी सी पत्रिका में शिक्षा एवं ज्ञान-विज्ञान की बातें लिखी रहती मुझे कहानियाँ सभी अच्छे लगे लेकिन मो की सच्चाई और ऐसे थे शास्त्री जी ये बहुत ही अच्छे लगे। कविताएँ सभी अ लगीं।

इस बार मैं हँसती दुनिया का बेस से इंतजार करूँगी।

–कु. संगीता, तिरथ वर्मा (गोंडगि

हँसती दुनिया का नया सदस्य हूँ। 'हँसती दुनिया' अक्टूबर १९९७ का पढ़ा। यह अंक हमें बहुत अच्छा लग इस अंक में कभी न भूलो, समय दुरुपयोग बहुत अच्छा लगा। आशा है सब कहानियाँ, लेख, समाचार, हमे सबको सिखलाई देकर संसार में नया उ बनाएगी।

–निगम प्रकाश कश्यप (मिर्जापु

मैं हँसती दुनिया का पुराना पा हूँ। मैं आपको पहली बार पत्र लिख हूँ। इसमें मुझे कभी न भूलो, दादा जी उत्तर, पढ़ो और हंसो, मोती की सच्च आदि बहुत अच्छे लगे। इसलिए मैं 'हँस दुनिया' का बेसब्री से इन्तजार करता रह हूँ।

–अनिल कुमार सोनी (सिरस


FOR
WEDDING
SAREES
SUIT
DUPATTAS
AND
LEHNGA
CHUNNIS
CHHABRA®
SILK & SAREE EMPORIUM
1st Floor, Roshan Chambers, 2380 Gali No. 12-13 Beadon Pura,
Ajmal Khan Road, Karol Bagh, New Delhi-110005 Phone : 5729430

Registered with the Registrar of Newspaper
For India under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-1119



Licence No. U(DN) 23/98
Licenced to Post
Without pre-payment

Posted at N.D. P.S.O.
Prescribed dates 21st & 22nd